Resource: Gateway Simplified Text (Hindi)

License Information

Gateway Simplified Text (Hindi) (Hindi) is based on: Gateway Simplified Text (Hindi), unfoldingWord, 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Gateway Simplified Text (Hindi)

Hebrews 1:1

1 बीते समय में, परमेश्वर ने उन लोगों के माध्यम से इस्राएल
के पूर्वजों से बातें की थीं जिन्होंने उसके संदेश का प्रचार किया
था। उस पूरे समय में उसने ऐसा किया था जिसमें वे पूर्वज
रहते थे, और उसने ऐसा करने के लिये कई अलग-अलग
तरीकों का उपयोग किया।

2 {हालाँकि,} जब यह अंतिम समयकाल {आरम्भ हुआ}, तो
परमेश्वर ने अपने पुत्र के माध्यम से हमसे बातें कीं। परमेश्वर ने
उसके साथ मिलकर इस संसार को रचा, और सारी वस्तुओं
का अधिकारी होने के लिये परमेश्वर ने उसका चुनाव किया।

3 परमेश्वर का पुत्र उस ज्योति के समान है जो यह प्रकाशित
करता है कि परमेश्वर कितना महिमामय है। असल में,
परमेश्वर कैसा है, इस बात को परमेश्वर का पुत्र पूर्ण रीति से
प्रकट करता है। सामर्थी रूप से बातें करके, वह {परमेश्वर के
द्वारा बनाई गई} सब वस्तुओं को सम्भाले रहता है। जब उसने
अपने लोगों को उनके द्वारा किए गए गलत कामों से शुद्ध कर
दिया, तो उसके बाद वह स्वर्ग पर चढ़ गया और {अपने पिता}
परमेश्वर के साथ शासन करने लगा।

4 {यह बातें जो उसके विषय में हैं इनका अर्थ यह है कि} वह
आत्मिक प्राणियों से कहीं अधिक बढ़कर है। उसी रीति से,
जिस नाम से परमेश्वर अब उसे बुलाता है वह उनके {नामों} से
भी बढ़कर है।

5 {तुम भी इस बात को कि परमेश्वर का पुत्र आत्मिक प्राणियों
से बढ़कर है इसलिये बोल सकते हो} क्योंकि परमेश्वर ने कभी
भी किसी आत्मिक प्राणी से ये शब्द नहीं कहे कि "आज के
दिन, मैंने सब को बता दिया है कि मैं तेरा पिता हूँ, और तू मेरा
पुत्र है!" और न ही {उसने किसी भी आत्मिक प्राणी के बारे में
ये शब्द कहे} कि "मैं उसका पिता होऊँगा, और वह मेरा पुत्र
होगा।" {हालाँकि, उसने ये शब्द अपने पुत्र से कहे थे।}

6 इससे भी बढ़कर, जब परमेश्वर ने अपने पुत्र को स्वर्गीय
संसार में उठा लिया, तो उसने आज्ञा दी: "सब आत्मिक प्राणी
जो परमेश्वर की सेवा करते हैं वे उसका आदर करें और
उसकी स्तुति करें।"

7 आत्मिक प्राणियों के बारे में परमेश्वर यह कहता है: "जो
आत्मिक प्राणी मेरी सेवा करते हैं, उन्हें मैंने वायु {के समान}
और जलती हुई आग {के समान} बना दिया है।"

8 दूसरी तरफ, अपने पुत्र के बारे में {परमेश्वर यह कहता है}:
"तू जो परमेश्वर है, तू सर्वदा राज्य करेगा, और तू अपने राज्य
पर न्यायपूर्वक शासन करेगा।

9 जो कुछ भी धार्मिकता से है, उससे तूने प्रेम रखा, और जिसने
भी परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ा, उससे तूने बैर रखा। उस
कारण से, तेरे परमेश्वर ने, अर्थात् मैंने तुझे तेरे साथ रहने वाले
किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में अधिक सामर्थी और
आनन्दित कर दिया है।

10 और {परमेश्वर अपने पुत्र के बारे में यह भी कहता है}: "तू
ही वह प्रभु है, जिसने सब बातों के आरम्भ के समय जो कुछ
भी अस्तित्व में है, उसकी सामर्थी रूप से सृष्टि की।

11 वे सब वस्तुएँ अन्त में नष्ट हो जाएँगी, परन्तु तू सर्वदा जीवित
रहेगा। वे उन कपड़ों के समान हैं जो पुराने होकर कट-फट
जाते हैं,

12 और तू {उन्हें उतारकर} ऐसे लपेट देगा कि मानो वे पुराने
कपड़े हों। जिस प्रकार कोई व्यक्ति कपड़े बदलता है, उसी
रीति से तू अपनी बनाई हुई वस्तुओं को बदल देगा। इसके
विपरीत, तू वही है जो एक जैसा रहता है और सर्वदा जीवित
है!"

13 परमेश्वर ने कभी भी किसी आत्मिक प्राणी से ये शब्द नहीं
कहे कि "जब तक मैं तेरे सब शत्रुओं को पराजित करता हूँ,
तब तक मेरे साथ शासन कर!" {हालाँकि, उसने ये शब्द अपने
पुत्र से कहे थे।}

14 सभी आत्मिक प्राणी ऐसे शक्तिशाली प्राणी हैं जो परमेश्वर
की सेवा करते हैं, और परमेश्वर ने उन्हें उन लोगों की सहायता
करने के लिये भेजा है जिनका वह शीघ्र ही उद्धार करेगा।

Hebrews 2:1

1 क्योंकि {परमेश्वर ने ये बातें अपने पुत्र से कही थीं}, इसलिये
हमें सबसे अधिक उस {शुभ संदेश} पर ध्यान लगाना चाहिए
जो हमने सीखा था। इस रीति से, हम उस पर विश्वास करने से
रुकते नहीं।

2 {यह बात इसलिये महत्वपूर्ण है} क्योंकि, उन आत्मिक
प्राणियों ने {इस्राएल के लोगों को} व्यवस्था सौंपते समय जो
बात बोली थी वह भरोसे के योग्य थी। इसके अलावा, जिस
किसी ने भी इस व्यवस्था को नहीं माना या इसे तोड़ा, परमेश्वर
ने उसे न्यायपूर्वक दण्ड दिया।

3 {चूँकि यह सत्य बात है}, इसलिये परमेश्वर निश्चित रूप से
हममें से हर उस व्यक्ति को दण्डित करेगा जो इस संदेश को
अनदेखा करता है कि परमेश्वर ने हमारा उद्धार करने के लिये
कैसे सामर्थी ढंग से कार्य किया है। वह प्रभु {यीशु} ही था
जिसने सबसे पहले यह संदेश सुनाया था, और जिन्होंने उसकी
सुनी थी उन्होंने हमें वही संदेश विश्वसनीय रूप से सुनाया था।

4 परमेश्वर ने विश्वासियों को सामर्थी और आश्चर्यजनक काम
करने के लिये सशक्त बनाकर हमें इस बात की भी पुष्टि की है
कि यह संदेश सत्य है। इसके अलावा, जिसे-जिसे परमेश्वर ने
चुना, उसने उस हर एक विश्वासी को पवित्र आत्मा दी।

5 अब परमेश्वर ने उन आत्मिक प्राणियों को उस स्वर्गीय संसार
का अधिकारी नहीं बनाया जिसे वह पृथ्वी पर लाएगा। ये वही
संसार है जिसके बारे में मैं बात कर रहा हूँ।

6 जब किसी ने पवित्रशास्त्र में यह लिखा तो उसने {मेरी उस
कही हुई बात की} पुष्टि की कि, "{हे परमेश्वर,} कोई भी मनुष्य
इस योग्य नहीं कि तू उनके बारे में विचार करे! कोई भी मनुष्य
इतना महत्वपूर्ण नहीं कि तू उसकी सुधि ले!

7 {इसके बजाय}, तूने आत्मिक प्राणियों की तुलना में मनुष्यों
को थोड़ा ही कम सामर्थी बनाया है, और तूने उन्हें बहुत
सम्मान देकर सशक्त किया है।

8 तूने उन्हें {अपनी बनाई हुई} हर एक वस्तु का अधिकारी
ठहराया है।" जब उसने लिखा कि "उन्हें हर एक वस्तु का
अधिकारी ठहराओ," तो इसका अर्थ यह था कि ऐसा कुछ भी
नहीं है जिस पर वे अधिकारी न हों। हालाँकि, इस वर्तमान
समय में, हम यह नहीं देख पाते कि मनुष्य हर एक वस्तु के
अधिकारी हैं।

9 हालाँकि, हम यीशु को देखते हैं। वही तो है जो थोड़े समय
के लिये आत्मिक प्राणियों की तुलना में कम सामर्थी था, और
{अब} परमेश्वर ने उसे बहुत सम्मान देकर सशक्त किया है।
क्योंकि यीशु मरा इसलिये परमेश्वर ने ऐसा किया। इस रीति
से, परमेश्वर ने दयालु होकर उसे उन सब लोगों के लिये मरने
दिया {जो उस पर विश्वास करते हैं}।

10 {उस रीति से कार्य करना} परमेश्वर के लिये उचित था,
जिसने {अस्तित्व में मौजूद} हर एक वस्तु की रचना करके
उसे निर्देशित किया। जब यीशु ने उस पर विश्वास करने वाले
उन सब लोगों को महिमान्वित करना आरम्भ किया जो उसके
अपने भाई-बहनों {के समान} हैं, तो जैसे यीशु ने दुःख उठाया,
परमेश्वर ने उसका उपयोग उसे उन लोगों का उद्धार करने में
सक्षम करने के लिये किया।

11 यीशु, जो अपने लोगों को परमेश्वर के लिये अलग करता है,
और वही लोग जिन्हें उसने परमेश्वर के लिये अलग किया है, वे
सब परमेश्वर ही की ओर से आते हैं। इसलिये, यीशु उन्हें
अपना भाई-बहन कहने में संकोच नहीं करता।

12 {यीशु उस समय उन्हें अपना भाई-बहन कहता है} जब वह
कहता है, "{हे परमेश्वर,} मैं अपने भाई-बहनों को बताऊँगा
कि तू कैसा है; जब लोग {तेरी आराधना करने के लिये} इकट्ठे
होंगे, तब मैं तेरा भजन गाऊँगा।"

13 आगे {यीशु कहता है}: "मैं उस पर भरोसा रखूँगा।" और
आगे {यीशु कहता है}, "मुझे और परमेश्वर की उन सन्तानों
को देखो जिन्हें उसने मुझे सौंपा है।"

14 इसलिये, क्योंकि मनुष्य ही परमेश्वर की सन्तान हैं, तो यीशु भी उन्हीं के समान एक मनुष्य बन गया। {उसने ऐसा इसलिये किया} ताकि वह मरकर, उस शैतान को हरा सके, जो लोगों को नियंत्रित करने के लिये इस तथ्य का उपयोग करता है कि मनुष्य तो मरते ही हैं।

15 {जब उसने ऐसा किया,} तो उसने उस रीति से छुटकारा पा लिया कि जिससे मृत्यु हमें जीते-जी भयभीत करती है।

16 जैसा कि तुम जानते हो कि {यीशु मनुष्य इसलिये बना}, क्योंकि वह आत्मिक प्राणियों की सहायता करने नहीं, बल्कि {इस्राएलियों के पूर्वज} अब्राहम के वंशजों की सहायता करने आया था।

17 क्योंकि {वह इसी कारण से आया था}, इसलिये यीशु को बिलकुल हमारे जैसा बनना था, जो कि उसके भाई-बहन हैं। इस रीति से, वह ऐसा शासकीय याजक हो सकता है जो दयालु और भरोसेमंद तरीके से परमेश्वर की सेवा करता हो, ताकि परमेश्वर के लोगों ने जो गलत काम किया है उसे वह क्षमा कर दे।

18 {यीशु उस प्रकार का याजक इसलिये हो सकता है} क्योंकि उसने पीड़ादायी बातों को सह लिया और इस बात का अनुभव किया कि बुरा काम करना भला कैसे लगता है। इसलिये, वह हर उस व्यक्ति की सहायता कर सकता है जो इस बात का अनुभव करता है कि बुरा काम करना भला कैसे लगता है।

Hebrews 3:1

1 हे मेरे संगी विश्वासियों, परमेश्वर ने तुम्हें अपने लिये अलग कर लिया है, और उसने हमें एक साथ स्वर्ग से बुला लिया है। चूँकि {जो यीशु ने किया वह मैंने तुम्हें बता दिया है,} इसलिये तुम्हें उसके बारे में विचार करना चाहिए। परमेश्वर ने उसे हमारे पास भेजा, और यीशु ही वह शासकीय याजक है जिस पर विश्वास करने की हम बात करते हैं।

2 जिस परमेश्वर ने उसे {शासकीय याजक} बनाया, उसकी उसने ईमानदारी से सेवा की है। {वह} मूसा के समान ही है, जिसने परमेश्वर के लोगों के भाग के रूप में {ईमानदारी से परमेश्वर की सेवा की थी}।

3 अब प्रत्येक भवन का कोई न कोई बनानेवाला होता है, और लोग भवन की {जितनी प्रशंसा करते हैं}, उसकी तुलना में उसे बनाने वाले की प्रशंसा करना अधिक उचित है। इसी प्रकार, परमेश्वर ही वह बनाने वाला है जिसने सब कुछ बनाया। इसलिये, लोगों को मूसा{, जिसे परमेश्वर ने बनाया}, की {प्रशंसा करने} से बढ़कर यीशु{, जो स्वयं परमेश्वर है,} की प्रशंसा करनी चाहिए।

5 मूसा ने एक ऐसे व्यक्ति के रूप में ईमानदारी से परमेश्वर की सेवा की जिसने परमेश्वर के सब लोगों की सहायता की थी। उस रीति से, उसने पहले ही उस बात की घोषणा कर दी थी जो परमेश्वर अब {यीशु के बारे में} कहता है।

6 परन्तु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, जो {ईमानदारी से} परमेश्वर के लोगों पर शासन करता है। जब तक हम हियाव बाँधकर और गर्व करते हुए उस बात की आशा करते रहते हैं {जो परमेश्वर हमें देगा}, तब तक हम उन्हीं लोगों में से हैं।

7 चूँकि {हम परमेश्वर के लोग हैं}, इसलिये {हमें वही करना चाहिए} जो पवित्र आत्मा कहता है: “आज के दिन, जब तुम पिता को {तुमसे} बातें करते सुनो,

8 तो हठ करके उसकी अनाज्ञाकारिता मत करना। {तुम्हारे पूर्वजों ने भी यही किया था} जब उन्होंने जंगल में रहते हुए परमेश्वर के विरुद्ध बलवा करके उसे क्रोध दिलाया था।

9 {जब वे} उन स्थानों में थे, तो तुम्हारे पूर्वजों ने यह देखने के लिये परमेश्वर को क्रोध दिलाया था कि वह क्या करेगा। यद्यपि उन्होंने उन सब आश्चर्य के कामों को देखा था जो उसने किये थे तौभी {उन्होंने ऐसा किया}।

10 उन 40 वर्षों की अवधि के दौरान जो हुआ था। इसलिये, उसने उन लोगों से क्रोधित होकर उसने उनके बारे में कहा, ‘वे हर समय गलत काम करना चाहते हैं। वे इस बात को नहीं समझते कि मैं क्या चाहता हूँ कि वे कैसा बर्ताव करें।

11 इसलिये फिर, क्योंकि वह उनसे क्रोधित था, उसने गम्भीर होकर इस बात की घोषणा की कि, ‘वे मेरे विश्राम में कभी भाग नहीं ले पाएँगे!’”

12 हे संगी विश्वासियों, इस बात पर ध्यान दो! इस बात को सुनिश्चित करो कि तुममें से कोई भी जन ऐसे बुरे और अविश्वासी तरीके से सोच-विचार न करे जो तुम्हें एकमात्र वास्तविक परमेश्वर के प्रति विश्वासघाती बना दे।

13 बल्कि, तुम्हें हर दिन, जिसे हम "आज का दिन" कहते हैं,
एक-दूसरे को {परमेश्वर के प्रति वफादार रहने के लिये}
प्रोत्साहित करना है। इस रीति से, तुममें से कोई भी जन पाप
नहीं करेगा और इस प्रकार अपने आप को धोखा नहीं देगा,
जिससे कि तुम परमेश्वर की आज्ञा मानने में असमर्थ न हो
जाओ।

14 {तुम्हें एक-दूसरे को इसलिये प्रोत्साहित करना है}, क्योंकि
हम मसीह के साथ {हर बात में} भागीदार हैं। जब से हमने
ऐसा करना आरम्भ किया तब से लेकर हमारे मरने तक, जब
तक हम उस पर भरोसा करते रहते हैं, {यह सत्य है}।

15 {तुम्हें एक-दूसरे को प्रोत्साहित करना है}, जब पवित्र आत्मा
यह कहे कि "आज के दिन, जब तुम परमेश्वर को {तुमसे} बातें
करते सुनो, तो हठ करके उसकी अनाज्ञाकारिता मत करना।
{तुम्हारे पूर्वजों भी ने यही किया था} जब उन्होंने परमेश्वर के
विरुद्ध बलवा किया था।"

16 अब तुम जानते हो कि जिन लोगों को मूसा ने मिस्र देश से
निकाला था वे सब के सब परमेश्वर के लोग ही थे, जिन्होंने
परमेश्वर को बातें करते हुए सुनकर भी उसके विरुद्ध बलवा
किया था।

17 तुम जानते हो कि वे परमेश्वर के लोग ही थे, जिन्होंने गलत
काम किया, और जिनसे परमेश्वर 40 वर्षों की अवधि तक
क्रोधित रहा। वे जंगल में ही मर मिटे।

18 तुम जानते हो कि वे परमेश्वर के लोग ही थे, जिन्होंने उसकी
आज्ञा नहीं मानी, और जिनके लिये उसने गम्भीर होकर इस
बात की घोषणा की कि वे उसके विश्राम में कभी भाग नहीं ले
पाएँगे।

19 अतः, हम यह बता सकते हैं कि {परमेश्वर के विश्राम में} वे
इसलिये भाग नहीं ले पाएँगे क्योंकि उन्होंने {उस पर} भरोसा
नहीं किया था।

Hebrews 4:1

1 इसलिये, {हम यह बता सकते हैं कि} परमेश्वर अभी भी इस
बात की प्रतिज्ञा करता है कि उसके लोग उसके विश्राम में
भाग लेंगे। इस कारण से, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि
तुममें से प्रत्येक जन को वास्तव में वह प्राप्त हो {जिसकी
परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है}।

2 {हमें इस बात को इसलिये सुनिश्चित करना चाहिए,} क्योंकि
हमने भी शुभ संदेश वैसे ही सुना जैसे उन्होंने सुना था।
हालाँकि, क्योंकि वे उन लोगों में से नहीं थे जिन्होंने सुनी हुई
बातों पर विश्वास किया था, इसलिये जो कुछ उन्होंने सुना
उससे उन्हें कोई सहायता नहीं मिली।

3 {ऐसा इसलिये है} क्योंकि {केवल} हम {शुभ संदेश पर}
विश्वास करने वाले लोग ही परमेश्वर के विश्राम में भाग लेते हैं,
{परन्तु जो विश्वास नहीं करते वे उसमें भाग नहीं ले पाते}।
जैसा कि पवित्र आत्मा कहता है, "अतः फिर, क्योंकि वह
उनसे क्रोधित था, इसलिये उसने गम्भीर होकर इस बात की
घोषणा की कि 'वे मेरे विश्राम में कभी भाग नहीं ले पाएँगे!'"
भले ही परमेश्वर ने संसार की रचना करने के बाद काम करना
बंद करके {विश्राम किया}, तौभी {परमेश्वर ने ऐसा कहा}।

4 {परमेश्वर ने विश्राम किया, इस बात को तुम इसलिये जानते
हो} क्योंकि पवित्र आत्मा ने {सप्ताह के} सातवें {दिन} के
विषय में कहीं पर कुछ कहा है। {वह कहता है कि,} "फिर,
जब {सप्ताह का} सातवाँ {दिन हुआ}, तो परमेश्वर ने {सब
वस्तुओं को बनाने का} काम पूरा करके उसने विश्राम किया।"

5 परन्तु फिर से {इस बात पर ध्यान दो} कि {इस्राएली पूर्वजों
के बारे में} उन शब्दों में {परमेश्वर क्या कहता है} जिन्हें मैंने
पहले ही बता दिया है कि "मेरे विश्राम में वे कभी भाग नहीं ले
पाएँगे!"

6 अतः फिर, जिन इस्राएली पूर्वजों ने बीते समय में शुभ संदेश
सुना था, उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा को नहीं माना, और
इसलिये परमेश्वर के विश्राम में उन्होंने भाग नहीं लिया।
हालाँकि, परमेश्वर अभी भी कुछ लोगों के लिये चाहता है कि
वे उसके विश्राम में भाग लें।

7 {उस कारण से,} पवित्र आत्मा ने एक बार फिर एक समय
का चुनाव किया है {जब हम परमेश्वर के विश्राम में भाग ले
सकते हैं}। {वह वही समय है} जिसे हम "आज का दिन"
कहते हैं। {उसने ऐसा तब किया} जब उसने {इस्राएली पूर्वजों
की अनाज्ञाकारिता के} बहुत समय बाद दाऊद के माध्यम से
बातें की थीं। जैसा कि मैंने पहले ही बता दिया है, उसने कहा
कि "आज के दिन, जब तुम परमेश्वर को {तुमसे} बातें करते
सुनो, तो हठ करके उसकी अनाज्ञाकारिता मत करना।"

8 इसलिये, पवित्र आत्मा एक अलग दिन को संदर्भित करता है {जब परमेश्वर के लोग उसके विश्राम में भाग ले सकते हैं} जो उस दिन के बाद आता है {जब यहोशू इस्राएली पूर्वजों को लेकर उस देश में गया था जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उनसे की थी}। इसका अर्थ यह है कि {जब यहोशू ने ऐसा किया,} तो उसने परमेश्वर के विश्राम में भाग लेने में उनकी सहायता नहीं की थी।

9 इसलिये, जैसा कि तुम देख सकते हो, कि परमेश्वर के लोग अभी भी परमेश्वर के विश्राम में भाग ले सकते हैं, {जिस प्रकार} यहूदियों के विश्रामदिन में {लोग विश्राम करते हैं}।

10 असल में, जो लोग परमेश्वर के विश्राम में भाग लेते हैं, वे उस काम को पूरा करके विश्राम करते हैं जिसे वे कर रहे होते हैं। {वे इसे वैसे ही करते हैं} जैसे परमेश्वर ने {सब वस्तुओं को बनाना} समाप्त करके विश्राम किया था।

11 इन सब बातों के कारण, हमें परमेश्वर के विश्राम में भाग लेने पर ध्यान लगाना चाहिए। इस रीति से, {हममें} से कोई भी इस्राएली पूर्वजों की तरह {परमेश्वर की} अनाज्ञाकारिता नहीं करेगा।

12 {तुम्हें इन बातों पर इसलिये ध्यान देना चाहिए,} क्योंकि परमेश्वर जो बातें बोलता है {वह उस व्यक्ति की तरह है जो} जीवित रहते हुए काम करता है, और जिसमें यह समझना भी शामिल है कि लोग क्या सोचते हैं और क्या योजना बनाते हैं। {यह ऐसे काम करता है कि मानो यह} बहुत चोखी दोधारी तलवार हो जो लोगों की हड्डियों को उनके पुट्ठों से काट सकती है और जो लोगों के आंतरिक जीवन को अलग-थलग कर सकती है।

13 परमेश्वर हर व्यक्ति और वस्तु के विषय में सब कुछ जानता है। यदि वह उसकी जाँच करना चाहे तो उसकी बनाई कोई भी वस्तु छिपी नहीं रह सकती। जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं वह वही है।

14 इसलिये, एक शक्तिशाली शासकीय याजक हमारे लिये काम करता है, जो स्वर्ग से होकर गया है। वह परमेश्वर का पुत्र, यीशु है। इस कारण से, जिस बात पर विश्वास करने की बात हम बोल रहे हैं उस पर हमें विश्वास करते रहना चाहिए।

15 अब जो शासकीय याजक हमारे लिये काम करता है, वह इस बात को अच्छी तरह से समझ सकता है कि हम कितने निर्बल हैं। असल में, जैसे हम अनुभव करते हैं ठीक वैसे ही उसने भी कई बार इस बात का अनुभव किया कि बुरा काम करना भला कैसे लगता है। हालाँकि, उसने कभी पाप नहीं किया।

16 अतः फिर, हमें हियाव बाँधकर परमेश्वर के निकट जाना चाहिए, जो अनुग्रह के साथ शासन करता है। इस रीति से, जब हमें उसकी सहायता की आवश्यकता होगी तो वह हमारे प्रति दयालु और कृपालु होकर कार्य करेगा।

Hebrews 5:1

1 जब परमेश्वर किसी व्यक्ति को शासकीय याजक होने के लिये नियुक्त करता है, तो वह लोगों के उस समूह में से परमेश्वर की सेवा करने हेतु उस व्यक्ति को उस समूह के निमित्त चुनता है। तब शासकीय याजक {परमेश्वर को} वह भेंटें या बलिदान चढ़ाता है जो पापों को दूर करने के लिये लोग देते हैं।

2 {प्रत्येक शासकीय याजक} निर्बल होता है। इस कारण, वह उन लोगों के प्रति जो परमेश्वर के बारे में अधिक नहीं जानते हैं और उन लोगों के प्रति जो विश्वास भी करते हैं और गलत काम भी करते हैं धीरज से काम ले सकता है।

3 इसके अलावा, क्योंकि {प्रत्येक शासकीय याजक निर्बल होता है}, इसलिये परमेश्वर उससे यह अपेक्षा करता है कि वह अपने स्वयं के पापों को दूर करने के लिये एक बलिदान चढ़ाए, ठीक वैसे ही जैसे {वह इस्राएल के} बाकी लोगों के {पापों को} दूर करने के लिये {बलिदान चढ़ाता है}।

4 अब लोग स्वयं ही सम्माननीय शासकीय याजक बनने का निर्णय नहीं ले सकते। बल्कि, {जो व्यक्ति शासकीय याजक बनेगा उसे} परमेश्वर ही चुनता है, ठीक वैसे ही जैसे {उसने प्रथम शासकीय याजक} हारून को {चुना था}।

5 इसी रीति से, मसीह ने भी एक गौरवशाली शासकीय याजक बनने का निर्णय स्वयं ही नहीं लिया। बल्कि, परमेश्वर पिता ने ही {उसे शासकीय याजक बनने के लिये चुना} जब उसने उससे कहा, “आज के दिन, मैंने सब लोगों को बता दिया है कि मैं तेरा पिता हूँ, और तू मेरा पुत्र है!”

Hebrews 6:1

6 इसी रीति से, {जैसा कि} तुम एक अन्य भजन में {पढ़ सकते हो}, परमेश्वर पिता ने {मसीह से} कहा: "जिस रीति से मलिकिसिदक एक याजक था, उसी प्रकार तू भी कभी याजकपद से नहीं हटेगा।"

7 जब मसीह ने मरने और फिर से जीवित हो जाने से पहले हमारे साथ जीवन बिताया था, उस समय वह अक्सर परमेश्वर से सामर्थी रूप से और आँसू बहा-बहाकर प्रार्थना किया करता था। उसने ऐसा इसलिये किया ताकि जब वह मर जाए तो परमेश्वर उसे बचा सके। क्योंकि उसने परमेश्वर का आदर किया, इसलिये परमेश्वर ने उसकी सुनी {और उसे फिर से जीवित कर दिया}।

8 यद्यपि वह परमेश्वर का पुत्र है, तौभी जब उसके साथ बुरी घटनाएँ घटीं तो उसने इस बात को सीखा कि परमेश्वर की आज्ञा मानने का क्या अर्थ है।

9 फिर, जब परमेश्वर ने उसे ऐसा करने में सक्षम बना दिया, तो पुत्र वह बन गया जो हर उस व्यक्ति का सदा के लिये उद्धार करता है जो उसकी अपेक्षाओं को पूरा करता है।

10 {उसने ऐसा तब किया} जब परमेश्वर ने उसे उसी प्रकार शासकीय याजक नियुक्त किया जिस प्रकार मलिकिसिदक एक याजक था।

11 मलिकिसिदक के सम्बन्ध में हमें बहुत सी बातें करनी हैं। हालाँकि, चूँकि तुम अच्छी तरह से सुनते {और समझते} नहीं हो, इसलिये {तुम्हें} ये बातें समझाना कठिन होगा।

12 {तुम्हें मसीह पर विश्वास किए हुए} इतना समय हो गया है कि तुम्हें तो दूसरों को {परमेश्वर के बारे में} सिखाना चाहिए था। यद्यपि, इसके बजाय, किसी व्यक्ति को अभी भी तुम्हें उन सरल बातों के बारे में सिखाना पड़ेगा जो परमेश्वर कहता है। तुम उन बालकों के जैसे हो जिन्हें अन्न खाने वाले सयानों के समान बनने के बजाय दूध पीना पड़ता है।

13 वे सब लोग जो सही बातों {और गलत बातों} के विषय में बहुत ही कम जानते हैं, वे उन लोगों के समान हैं जो केवल दूध पीते हैं। असल में, वे बालकों के समान हैं।

14 दूसरी तरफ, जो लोग परमेश्वर के विषय में बहुत कुछ जानते हैं वे अन्न {खाने वाले सयानों के समान} हैं। इन लोगों ने सही बातों एवं गलत बातों को पहचानने और उनके बीच अंतर करने का लगातार अभ्यास किया है।

Hebrews 6:1

1 इसलिये, हमें और अधिक सीखना चाहिए ताकि हम परिपक्व हो जाएँ। हमें मसीह के बारे में केवल सबसे बुनियादी बातों पर ही ध्यान केंद्रित नहीं करते रहना चाहिए। {दूसरे शब्दों में कहें तो}, हमें फिर से इस बारे में सीखने की आवश्यकता नहीं है कि बेकार के कामों को करना कैसे बंद करें या परमेश्वर पर कैसे भरोसा करें।

2 लोगों को बपतिस्मा देने के विभिन्न तरीकों के बारे में, दूसरों की {सहायता करने के लिये उन पर} हाथ रखने के बारे में, जो मर गए हैं वे फिर से कैसे जीवित होंगे इस बारे में, या इस बारे में कि परमेश्वर अन्त में इस बात का निर्णय कैसे करेगा कि लोग दोषी हैं या निर्दोष हैं, {हमें फिर से नहीं} सीखना {चाहिए}।

3 इस समय, जब तक परमेश्वर चाहता है {कि हम ऐसा करें}, हम वास्तव में {और भी अधिक सीखेंगे ताकि हम परिपक्व हो जाएँ}।

4 {मैं तुम्हें एक ऐसी बात के बारे में बताता हूँ} जो घटित नहीं हो सकती। उन लोगों के {बारे में विचार करो} जिन्होंने कभी शुभ संदेश के बारे में सुना था। उन्होंने उस बात का अनुभव किया जो परमेश्वर {अपने लोगों को} स्वर्ग से देता है, और उन्होंने परमेश्वर का आत्मा प्राप्त किया।

5 परमेश्वर जो बातें कहता है वे कितनी भली हैं इसका उन्होंने अनुभव किया, और {उन्होंने पहले से ही} उन सामर्थी बातों का {अनुभव करना आरम्भ कर दिया है} जो परमेश्वर उस समय करेगा जब वह संसार को फिर से नया करेगा।

6 {इस बारे में विचार करो कि क्या होगा} यदि ये लोग शुभ संदेश पर विश्वास करना बंद कर दें। {उस मामले में,} वे ऐसा नहीं कर सकते कि फिर से पश्चाताप करें और विश्वास करें। {ऐसा इसलिये है क्योंकि उन्होंने जो किया} वह स्वार्थी होकर परमेश्वर के पुत्र को क्रूस पर चढ़ाने और अपमानित करने जैसा है।

7 {यहाँ इसका एक उदाहरण है:} परमेश्वर किसी भी ऐसे खेत
को आशीष देता है जहाँ, एक बार बारिश पड़ने पर, ऐसी
फसलें उगें जिनका लोग उपयोग करते हैं।

8 हालाँकि, जब किसी खेत में बेकार पौधे उगते हैं, तो उससे
किसी की सहायता नहीं होती, और परमेश्वर शीघ्र ही उसे शाप
देगा। अन्त में, {उन सब बेकार पौधों को जलाने के लिये} कोई
व्यक्ति उसमें आग लगा देगा।

9 हे संगी विश्वासियों, जिनसे मैं प्रेम रखता हूँ, भले ही मैंने तुम्हें
इस रीति से चेतावनी दी है, तौभी मुझे निश्चय है कि तुम {मेरे
कहने से} कहीं अधिक दृढ़ता से विश्वास कर रहे हो। {असल
में, मुझे इस बात का निश्चय है कि} परमेश्वर ने तुम्हारा उद्धार
कर दिया है।

10 सचमुच, चूँकि परमेश्वर सदा न्यायपूर्वक कार्य करता है,
इसलिये वह इस बात को अनदेखा नहीं करेगा कि तुम कैसे
कार्य करते हो और तुम {दूसरों से} कैसे प्रेम करते हो। तुमने
यह साबित कर दिया है कि तुम परमेश्वर का आदर करने के
लिये ये काम करते हैं, विशेष करके जब तुमने परमेश्वर के
लोगों की सहायता की थी और उनकी सहायता कर भी रहे
हो।

11 मेरी बड़ी इच्छा है कि तुम्हारे मरने तक, तुम सब लगन के
साथ इस पूर्ण भरोसे पर ध्यान लगाए रहो {कि परमेश्वर तुम्हें
वही देगा} जिसकी तुम विश्वास के साथ अपेक्षा करते हो।

12 इस रीति से, तुम आलसी न ठहरोगे। इसके बजाय, तुम वही
करोगे जो अन्य विश्वासियों ने किया है: जो परमेश्वर ने उनसे
प्रतिज्ञा की थी उसे उन्होंने इसलिये प्राप्त किया, क्योंकि
उन्होंने उस पर भरोसा किया और धीरज धरकर प्रतीक्षा की।

13 जब परमेश्वर ने कहा कि वह अब्राहम के लिये कुछ करेगा,
तो उसने स्वयं ही इसका आश्वासन दिया। {उसने ऐसा
इसलिये किया} क्योंकि हर दूसरा व्यक्ति जो इसका आश्वासन
दे सकता था वह {परमेश्वर से} कम सामर्थी था।

14 उसने {अब्राहम से जो} प्रतिज्ञा की थी {वह यह थी}: "मैं
निश्चित रूप से तुझे आशीष दूँगा, और मैं निश्चित रूप से तुझे
बहुत से वंशज दूँगा।"

15 क्योंकि {परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा की थी उसका आश्वासन भी
दिया}, और क्योंकि अब्राहम इसकी आशा में लगा रहा,
इसलिये परमेश्वर ने जो उससे प्रतिज्ञा की थी, वह {अर्थात् एक
पुत्र} उसे दिया।

16 अब, लोगों के पास कोई ऐसा जन भी है जो {उनके द्वारा की
गई प्रतिज्ञा के} आश्वासन से भी अधिक सामर्थी है। असल में,
जब कोई व्यक्ति इस रीति से प्रतिज्ञा करते हुए आश्वासन देता
है, तो यह बात निश्चित रूप से उस निष्कर्ष पर पहुँचती है
जिसके बारे में लोग बहस कर रहे होते हैं।

17 इसी रीति से, परमेश्वर उन लोगों पर जो उसकी प्रतिज्ञाओं
को प्राप्त करेंगे बड़े स्पष्ट रूप से यह बात प्रदर्शित करना
चाहता था कि वह जो करने का मंशा रखता है उसे वह नहीं
बदलेगा। इसलिये, उसने जो प्रतिज्ञा की थी उसका उसने
आश्वासन भी दिया {जैसे मनुष्य करते हैं}।

18 अतः, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा करके शपथ भी खाई, और वह
इन बातों में से किसी के बारे में झूठ नहीं बोलेगा और न ही
उसे बदलेगा। हमारे लिये {उसने ऐसा किया}, जिन्होंने हम
लोगों का उद्धार करने के लिये उस पर भरोसा किया है। इस
रीति से, वह हमें आत्मविश्वास से उस वस्तु की अपेक्षा करते
रहने के लिये प्रोत्साहित करता है जिसे वह हमें देने के लिये
तैयार है।

19 जब हम विश्वास के साथ उस वस्तु की आशा करते हैं {जो
परमेश्वर हमें देगा}, तो यह ऐसा है कि मानो एक लंगर हमें
बहुत सुरक्षित रूप से पकड़े हुए है {ताकि हम परमेश्वर पर
भरोसा करने से न डिगें}। इसके अलावा, {जब हम विश्वास के
साथ उस वस्तु की आशा करते हैं जो परमेश्वर हमें देगा}, तो
यह ऐसा है कि मानो हम {स्वर्गीय} पवित्रस्थान के भीतरी भाग
में, लटके हुए कपड़े के पीछे चले गए हैं{, और पहले ही इसे
प्राप्त कर चुके हैं}।

20 {यह वही स्थान है} जहाँ यीशु हमारे लिये {परमेश्वर की सेवा
करने} और हमारे लिये मार्ग खोलने के लिये गया था। जैसे
मलिकिसिदक एक याजक था, उसी रीति से एक शासकीय
याजक बनने के बाद जो सर्वदा {परमेश्वर की सेवा} करेगा
{वह वहाँ गया है}।

Hebrews 7:1

1 {अब मैं} मलिकिसिदक {के विषय में और बताऊँगा}।
उसने शालेम {नगर} पर शासन किया, और उसने एक

याजक के रूप में सबसे महान् परमेश्वर की सेवा की। जब अब्राहम अपने कुछ शत्रुओं को पराजित करने के बाद घर जा रहा था, तो मलिकिसिदक ने उससे भेंट करके उसे आशीष दी।

2 तब अब्राहम ने {अपने शत्रुओं को पराजित करते समय जो कुछ लूटा था} उसका दसवाँ अंश उसे दिया। {इब्रानी भाषा में} {"मलिकिसिदक" नाम} का अर्थ "न्यायी राजा" होता है। "शालेम {नगर} का शासक" {इस उपाधि} का अर्थ "शान्तिपूर्ण शासक" होता है, {चूँकि "शालेम" की ध्वनि वैसी ही है जो "शान्तिपूर्ण" के लिये इब्रानी भाषा के शब्द की है।

3 {जब मूसा ने मलिकिसिदक के विषय में लिखा, तो उसने} उसके पिता, उसकी माता, उसके अन्य पूर्वजों, वह कब जन्मा, या वह कब मरा {इसके बारे में कुछ नहीं कहा}। इसलिये, {मूसा} ने उसका वर्णन ऐसे किया कि मानो वह परमेश्वर के पुत्र के समान हो और ऐसे कि मानो वह सर्वदा एक याजक के रूप में सेवा करता हो।

4 सब इस्राएलियों के पूर्वज, अब्राहम ने मलिकिसिदक को उन सबसे मूल्यवान वस्तुओं का दसवाँ अंश दिया {जो उसने अपने शत्रुओं को पराजित करते समय लूटी थी}, इससे तुम बता सकते हो कि मलिकिसिदक कितना महत्वपूर्ण था।

5 मूसा की व्यवस्था में, उन लोगों से {परमेश्वर ने बात की} जो लेवी के कुल का भाग थे और जो याजकों के रूप में सेवा किया करते थे। उसने उन्हें आज्ञा दी कि जो कुछ उनके सम्बन्धी बाकी इस्राएलियों ने, {कमाया या उगाया है}, वे उनसे उसका दसवाँ अंश लें। इस तथ्य के बावजूद कि सब इस्राएली अब्राहम के वंशज हैं, {परमेश्वर ने यह आज्ञा दी}।

6 अब मलिकिसिदक तो लेवी के कुल का भाग नहीं था। इसके बावजूद, जो अब्राहम ने {अपने शत्रुओं को पराजित करते समय लूटा था} उसका दसवाँ अंश उसे मिला। इसके अलावा, उसने अब्राहम को आशीष दी, जो वही मनुष्य है जिससे परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी {कि वह उसे कई वंशज देगा}।

7 अब हर कोई इस बात से सहमत होगा कि अधिक महत्वपूर्ण लोग कम महत्वपूर्ण लोगों को आशीष देते हैं। {अतः, क्योंकि उसने अब्राहम को आशीष दी, इसलिये मलिकिसिदक अब्राहम से अधिक महत्वपूर्ण है।}

8 मूसा की व्यवस्था में, हमें इस बारे में मालूम होता है कि याजकों को उन सब का दसवाँ अंश कैसे मिलता है {जो बाकी के इस्राएली लोग कमाते या उपजाते हैं}, परन्तु ये सब याजक तो मर-मिटते हैं। मलिकिसिदक के बारे में जो कहानी है, उससे हमें यह मालूम होता है कि {अब्राहम ने अपने शत्रुओं से जो कुछ लूट लिया था उसका दसवाँ अंश भी} उसे मिला, और वह जीवित भी रहा।

9 असल में, एक प्रकार से, जब अब्राहम ने {उसे दसवाँ अंश दिया था}, तो लेवी {और उसके कुल के याजकों ने भी जो कुछ उनके पास था उसका} दसवाँ अंश मलिकिसिदक को दिया था। {यह सत्य है,भले ही} वे वही लोग हैं जो उसमें से दसवाँ अंश प्राप्त करते हैं {जो इस्राएलियों के पास है}।

10 {जो मैंने कहा उसका अर्थ इसलिये बनता है} क्योंकि लेवी का {उस समय तक जन्म नहीं हुआ था} और {एक रीति से,} वह तब भी अपने परदादा अब्राहम के भीतर ही था, जब वह और मलिकिसिदक एक दूसरे से मिले थे।

11 अब परमेश्वर ने जो व्यवस्था इस्राएलियों को दी, वह लेवी के वंशजों से याजक के रूप में सेवा कराने पर आधारित थी। अतः, मान लीजिए कि इन याजकों ने परमेश्वर की सेवा करने के लिये जो किया उसके माध्यम से वे लोग वही बन सकते हैं जो परमेश्वर उन्हें बनाना चाहता था। {उस मामले में}, जिस रीति से हारून याजक था उसके बजाय परमेश्वर ने कभी भी किसी अन्य याजक को वैसे सेवा करने के लिये नियुक्त नहीं किया होगा जिस रीति से मलिकिसिदक एक याजक था। {हालाँकि, इस प्रकार के याजक को परमेश्वर ने ही नियुक्त किया था।}

12 {तुम बता सकते हो कि परमेश्वर की व्यवस्था इस बात पर आधारित थी कि लेवी के वंशज याजक के रूप में सेवा करें,} क्योंकि जब भी लोगों का याजकों के रूप में सेवा करने का तरीका बदले तो व्यवस्था को भी बदलना चाहिए।

13 {तुम बता सकते हो कि परमेश्वर ने लोगों के याजकों के रूप में सेवा करने के तरीके को बदल दिया है,} क्योंकि जिस यीशु को परमेश्वर ने {याजक} कहा, वह लेवी के वंशजों में से नहीं है, बल्कि लेवी के भाइयों में से एक का वंशज है। इस मनुष्य के किसी भी वंशज ने याजक के रूप में सेवा नहीं की है।

14 असल में, हम सभी जानते हैं कि हमारा प्रभु {यीशु} {लेवी के भाई} यहूदा का वंशज है, और मूसा ने याजकों के रूप में

सेवा करने वाले यहूदा के वंशजों के बारे में कुछ भी नहीं लिखा।

15 इसके अलावा, {तुम} और भी स्पष्ट रूप से {यह बता सकते हो} {कि परमेश्वर ने लोगों के याजकों के रूप में सेवा करने के तरीके को बदल दिया है,} चूँकि परमेश्वर ने एक अलग तरह के याजक{, अर्थात् यीशु,} को नियुक्त किया है, जो मलिकिसिदक के जैसे परमेश्वर की सेवा करता है।

16 वह एक याजक के रूप में सेवा इसलिये करता है क्योंकि कोई भी बात उसे जीवित रहने से नहीं रोक सकती, जो उसे एक सामर्थी {याजक} बनाती है। {इस प्रकार के याजक के रूप में,} वह इस बात पर निर्भर नहीं है कि परमेश्वर ने मूसा की व्यवस्था में इस बारे में क्या आज्ञा दी थी कि मानवीय याजक {लेवी के वंशज कैसे हैं}।

17 {तुम बता सकते हो कि उसके बारे में यह बात सत्य इसलिये है}, क्योंकि परमेश्वर पिता ने {उससे} कहा था: "जिस रीति से मलिकिसिदक एक याजक था, उसी प्रकार तू भी कभी याजकपद से नहीं हटेगा।।"

18 इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने {याजकों के विषय में} जो आज्ञा पहले दी थी उसे उसने वापस ले लिया है। {उसने ऐसा इसलिये किया क्योंकि} काम करने का वह तरीका अप्रभावी था।

19 और {वह तरीका अप्रभावी इसलिये था} क्योंकि परमेश्वर ने पहले जो आज्ञा दी थी उसे करने के द्वारा लोग वह नहीं बने जो परमेश्वर उन्हें बनाना चाहता था। अब इसका अर्थ यह भी है कि परमेश्वर ने हमें आत्मविश्वास से अपेक्षा करने के लिये कुछ बेहतर प्रदान किया है। जब हम आत्मविश्वास से उसकी अपेक्षा करते हैं, तो हम परमेश्वर के समीप जाते हैं।

20 अब परमेश्वर ने लेवी के कुछ वंशजों को याजक बनाते समय जो कहा, उसका आश्वासन नहीं दिया था। हालाँकि, मसीह को {याजक बनाते समय उसने} जो कहा, उसने उसका आश्वासन दिया था। जो परमेश्वर ने उससे कहा था वह यह था: "प्रभु ने जो कहा है उसने उसका आश्वासन दिया है, तथा वह कुछ और नहीं करेगा: 'तू कभी भी याजकपद से नहीं हटेगा!'" अतः, जैसे कि {यीशु एक महान् याजक के रूप में इसलिये कार्य करता है क्योंकि} परमेश्वर ने उस बात का आश्वासन दिया था जो उसने तब कही थी {जब उसने उसे याजक ठहराया था},

22 वैसे ही एक उत्तम वाचा भी है, जिसका आश्वासन यीशु देता है।

23 इसके अलावा, {लेवी के वंशजों में से} प्रत्येक की मृत्यु हो गई और इसलिये वे {याजक के रूप में सेवा करना} जारी नहीं रख सके। उस कारण से, {लेवी के ऐसे कई वंशज} हुए हैं जिन्होंने याजकों के रूप में सेवा की है।

24 हालाँकि, यीशु कभी नहीं मरेगा। इस कारण से, वह सर्वदा एक याजक के रूप में सेवा करेगा।

25 क्योंकि {वह सर्वदा एक याजक के रूप में सेवा करता है,} इसलिये वह ऐसे किसी भी व्यक्ति को पूरी तरह से बचा सकता है, जो उसके द्वारा किए गए कार्यों के कारण, परमेश्वर के समीप जाता है। {वह ऐसा कर इसलिये सकता है क्योंकि} वह कभी नहीं मरेगा और इस प्रकार वह परमेश्वर से उनकी सहायता करने के लिये सर्वदा विनती कर सकता है।

26 यीशु बिलकुल उसी प्रकार का शासकीय याजक है जिसकी हमें आवश्यकता है। वह परमेश्वर का आदर करता है, वह बुराई के बारे में नहीं सोचता, और वह ऐसा काम नहीं करता जो उसे अशुद्ध करे। वह उन लोगों में से नहीं है जो पाप करते हैं, और वह अब सर्वोच्च स्वर्ग में निवास करता है।

27 अब {लेवी के प्रत्येक वंशज को, जो} शासकीय याजक {के रूप में सेवा करता है}, प्रतिदिन {परमेश्वर को} बलिदान चढ़ाना पड़ता है। सबसे पहले, वह अपने स्वयं के पापों को दूर करने के लिये एक बलिदान चढ़ाता है, और उसके बाद वह बाकी इस्राएलियों के पापों को दूर करने के लिये एक बलिदान चढ़ाता है। हालाँकि, यीशु ने एक ही बार स्वयं को {बलिदान के रूप में} चढ़ाकर {सब लोगों के पापों को दूर कर दिया}, इसलिये उसे {कई बलिदान चढ़ाने की} आवश्यकता नहीं है।

28 अन्त में, परमेश्वर ने मूसा के माध्यम से आज्ञा दी थी कि कुछ लोग याजक के रूप में सेवा करें, परन्तु ये याजक निर्बल होने के कारण {मर जाते हैं}। इसके विपरीत, जब परमेश्वर ने उस बात का आश्वासन दिया जो उसने कही थी, जिसे उसने {मूसा के माध्यम से उन बातों की} आज्ञा देने के बाद किया, तो उसने अपने पुत्र को सबसे प्रभावी {याजक} के रूप में सर्वदा {सेवा करने में} सक्षम बनाया।

Hebrews 8:1

1 जिस मुख्य विचार के बारे में मैं लिख रहा हूँ वह यह है: जिस
प्रकार के शासकीय याजक का मैंने वर्णन किया है वह हमारे
लिये सेवा कर रहा है। वह स्वर्गीय स्थानों में परमेश्वर {पिता}
के साथ रहने के लिये चला गया है, और उसने शासन करना
आरम्भ कर दिया है।

2 वह परम पवित्र स्थान और परम परिशुद्ध तम्बू में सेवा करता
है। {इस पवित्रस्थान को} किसी मनुष्य ने नहीं, बल्कि प्रभु
{परमेश्वर} ने बनाया है।

3 अब परमेश्वर ही लोगों को शासकीय याजक बनाता है ताकि
वे बलिदान चढ़ा सकें। क्योंकि {शासकीय याजक यही करते
हैं,} इसलिये यीशु को भी बलिदान चढ़ाने की आवश्यकता थी।

4 अतः, क्योंकि जो याजक {पहले से ही लेवी के वंशज हैं} वे
ही परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार {पृथ्वी पर} बलिदान चढ़ाते
हैं, इसलिये यदि यीशु {इस समय} पृथ्वी पर होता तो वह
याजक के रूप में सेवा नहीं कर रहा होता।

5 वे याजक वही काम करते हैं जो परमेश्वर {उस पवित्रस्थान
में} चाहता है जो स्वर्गीय {पवित्रस्थान} का नमूना है। {तुम बता
सकते हो कि यह इसलिये सत्य है,} क्योंकि परमेश्वर ने इसे
मूसा पर उस समय प्रकट किया था जब मूसा इस्राएलियों से
पवित्र तम्बू का निर्माण कराने जा रहा था। {उस समय,}
परमेश्वर ने उससे बात की, "इस बात को सुनिश्चित कर कि
{उस पवित्र तम्बू के बारे में} सब कुछ उस मूल {पवित्रस्थान
से} मेल खाता हो जिसे मैंने तुझ पर प्रकट किया था जब सीनै
पर्वत पर {तू मेरे साथ था}!"

6 परन्तु {यीशु के बारे में} जो बात सत्य है वह यह है: वह {लेवी
के वंशजों की तुलना में} बहुत बेहतर तरीके से सेवा करता है।
उसी रीति से, जो वाचा परमेश्वर ने यीशु के माध्यम से अपने
लोगों के साथ बाँधी थी, वह {उस वाचा से भी} बड़ी है, {जो
परमेश्वर ने इस्राएलियों के साथ बाँधी थी}। ऐसा इसलिये है
क्योंकि जब परमेश्वर ने यह नयी वाचा बाँधी तब उसने बड़ी-
बड़ी बातों की प्रतिज्ञा की थी।

7 अब {तुम बता सकते हो कि} परमेश्वर ने इस्राएलियों के
साथ जो वाचा बाँधी थी वह सिद्ध इसलिये नहीं थी, क्योंकि
परमेश्वर ने एक और वाचा बाँधने की इच्छा की थी।

8 {तुम बता सकते हो कि पहली वाचा इसलिये सिद्ध नहीं थी,}
क्योंकि परमेश्वर ने यह घोषणा की थी कि इस्राएलियों ने उस
वाचा का पालन पूरी तरह से नहीं किया जब उसने कहा, "जो
मैं तुमसे कहता हूँ वह यह है: ध्यान दो! शीघ्र ही मैं इस्राएल के
राज्य और यहूदा के राज्य दोनों में रहने वाले अपने सब लोगों
के साथ एक नयी वाचा बाँधूँगा।

9 {वह वाचा} उस वाचा के समान नहीं होगी जो मैंने उनके
पूर्वजों के साथ उस समय बाँधी थी जब मैंने प्रेमपूर्वक उन्हें
मिस्र देश से छुड़ाया था। जो मैं कहता हूँ वह यह है: {यह वाचा
उस वाचा के समान इसलिये नहीं होगी,} क्योंकि उन्होंने
उसका पालन नहीं किया, इसलिये मैंने उन्हें त्याग दिया।

10 यह उस प्रकार की वाचा है जिसे मैं अपनी प्रजा, इस्राएलियों
के साथ शीघ्र ही बाँधूँगा। जो मैं कहता हूँ वह यह है: मैं उन्हें
अपनी व्यवस्था को समझने और उसका पालन करने में
सक्षम बनाऊँगा। मैं वह परमेश्वर बनूँगा जिसकी वे आराधना
करेंगे, और वे वही लोग होंगे जिनकी मैं चिन्ता करूँगा।

11 किसी भी व्यक्ति को कभी दूसरे इस्राएली को यह निर्देश
नहीं देना पड़ेगा कि 'प्रभु परमेश्वर पर भरोसा कर और उसकी
आराधना कर।' {ऐसा इसलिये होगा} क्योंकि मेरे सब लोग
मुझ पर भरोसा करेंगे और मेरी आराधना करेंगे, इससे कोई
फरक नहीं पड़ता कि वे कितने महत्वपूर्ण या महत्वहीन हैं।

12 {ऐसा इसलिये होगा} क्योंकि मैं दया करके उनके द्वारा
किए गए पापों के लिये उनको क्षमा करूँगा। मैं उनके द्वारा
किए गए पापों के लिये उनको दोबारा कभी दण्ड नहीं दूँगा।"

13 जब परमेश्वर इस "नया" शब्द का उपयोग करता है, तो
उसका अर्थ है कि {इस्राएलियों के साथ बाँधी गई} पहले वाली
{वाचा} अब पुरानी हो गई है। इसके अलावा, जो पुराना हो
गया है उसका अस्तित्व शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा।

Hebrews 9:1

1 जहाँ तक पहली वाचा की बात है {जो परमेश्वर ने इस्राएल के
साथ बाँधी थी}, उसमें लोगों को पृथ्वी पर एक पवित्रस्थान में
एक विशिष्ट तरीके से परमेश्वर की आराधना करने की
आवश्यकता थी।

2 जो पवित्रस्थान इस्राएलियों ने स्थापित किया वह एक पवित्र
तम्बू था {जिसमें दो भाग थे}। उन्होंने बाहरी भाग को पवित्र

स्थान कहा। इसमें {उन्होंने} दीपकों के लिये एक दीवट और एक मेज {रखी} जिस पर उन्होंने {विशेष} रोटी रखी।

3 भीतरी भाग एक लटकते हुए भीतरी कपड़े के दूसरी ओर था। उन्होंने इस {भीतरी भाग} को परम पवित्र स्थान कहा।

4 उसमें उन्होंने धूप के लिये वेदी और पवित्र सन्दूक को रखा, और उन दोनों को उन्होंने पूरी तरह सोने से मढ़ दिया था। पवित्र सन्दूक में, {उन्होंने} मन्ना से भरा एक सोने का मर्तबान {रखा} {, जो वही भोजन था जिसे परमेश्वर ने उस समय इस्राएलियों को दिया था जब वे जंगल में रहते थे}। {उन्होंने उसमें} हारून की लाठी {भी रखी}, जिससे परमेश्वर ने पत्ते निकलवा दिए थे। {उन्होंने उसमें} वे पत्थर की पटियाएँ {भी रखीं} {जिन पर मूसा ने} परमेश्वर के साथ वाचा के {सबसे महत्वपूर्ण भाग लिखे थे}।

5 पवित्र सन्दूक के ऊपर, {उन्होंने} पंखों के साथ महिमामय आत्मिक प्राणियों {की दो मूर्तियाँ रखीं}। {ये मूर्तियाँ} पवित्र सन्दूक के ढक्कन पर छाया डालती थीं। {हालाँकि,} अभी इनमें से प्रत्येक वस्तु पर सावधानीपूर्वक चर्चा करने का सही समय नहीं है।

6 उन सब वस्तुओं को स्थापित करने के बाद, याजक प्रतिदिन परमेश्वर की सेवा करने के लिये पवित्र तम्बू के बाहरी भाग में जाते थे।

7 दूसरी तरफ, वर्ष में केवल एक दिन {वर्तमान} शासकीय याजक {पवित्र तम्बू के} भीतरी भाग में जाता है। उसे {अपने साथ एक पशु का} लहू लेना होता है, जिसे वह अपने {पापों} और बाकी इस्राएलियों द्वारा गलती से किए गए पापों को दूर करने के लिये {परमेश्वर को} चढ़ाता है।

8 {याजक पवित्र तम्बू में जो करते हैं उसके माध्यम से} पवित्र आत्मा इस बात को प्रकट करता है कि परमेश्वर ने यह नहीं बताया कि उस समय के दौरान {स्वर्गीय} परम पवित्र स्थान में कैसे प्रवेश किया जाए जब उसने लोगों से {पार्थिव} पवित्र तम्बू के पहले भाग का उपयोग करने की इच्छा की थी।

9 {पार्थिव पवित्र तम्बू का यह पहला भाग} लाक्षणिक रूप से उस समय का वर्णन करता है जिसमें वे इस्राएली रहते थे। उस समय, याजक ऐसी भेंटें चढ़ाते थे जो उन भेटों को लाने वाले लोगों को इन बातों के बीच ठीक से अंतर कर पाने में सक्षम नहीं कर पाई कि क्या सही है और क्या गलत है।

10 उन्होंने उन नियमों का भी पालन किया जो केवल शारीरिक बातों के बारे में थे, {जिनमें} क्या खाना-पीना है और अक्सर पानी से कैसे नहाना है, इनके बारे में {नियम भी शामिल थे}। परमेश्वर ने उन्हें ये नियम उस समय तक पालन करने के लिये दिए थे, जब तक कि वह अपने लोगों के साथ एक नयी वाचा नहीं बाँध लेता।

11 इसके विपरीत, जब मसीह ने शासकीय याजक के रूप में काम करना आरम्भ किया, तो {उसने हमें} वे अच्छी वस्तुएँ {प्रदान कीं} जो अब हमारे पास हैं। वह {स्वर्गीय} पवित्र तम्बू से होकर गया जो {पार्थिव तम्बू की तुलना में} बेहतर कार्य करता है। इस पवित्र तम्बू को मनुष्यों ने नहीं, बल्कि परमेश्वर ने बनाया है, और यह पृथ्वी पर नहीं है।

12 फिर, जब वह केवल एक ही बार {स्वर्गीय} परम पवित्र स्थान में गया, तो उसने बलि किए हुए पशुओं का लहू वैसे नहीं चढ़ाया{, जैसे वे याजक चढ़ाते हैं जो लेवी के वंशज हैं}। इसके बजाय, उसने अपना लहू चढ़ाया और {अपने लोगों को} हमेशा के लिये उनके पापों से मुक्त कर दिया।

13 अब {वे याजक} किसी व्यक्ति के द्वारा बलिदान किए हुए पशुओं का लहू {चढ़ाते हैं}, और जिस गाय को उन्होंने जलाया था, उसकी राख को वे अशुद्ध लोगों पर छिड़कते हैं। {जब याजक इन कामों को करते हैं,} तो वे वास्तव में किसी व्यक्ति के बाहरी हिस्से को शुद्ध करते हैं।

14 {चूँकि यह बात सत्य है,} इसलिये मसीह अपने लहू से जो काम करता है वह लोगों को और भी अधिक शुद्ध करता है! उसने स्वयं को परमेश्वर के सामने एक सिद्ध बलिदान के रूप में चढ़ा दिया, और उस आत्मा ने जो सर्वदा जीवित है, उसे ऐसा करने में सक्षम बनाया। जो कुछ भी तुम करते हो जिससे कुछ भी हासिल नहीं होता उसे दूर करते हुए, वह तुम सब लोगों के भीतरी हिस्से को शुद्ध करता है, और तुम्हें वह काम करने में सक्षम बनाता है जो एकमात्र वास्तविक परमेश्वर की इच्छा है।

15 क्योंकि {मसीह लोगों के भीतरी हिस्से को शुद्ध करता है}, इसलिये परमेश्वर ने उसके माध्यम से एक नयी वाचा बाँधी है। उस रीति से, परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों को वह देता है, जिसकी उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह उन्हें सर्वदा के लिये प्राप्त होगा। {ऐसा इसलिये हो सकता है क्योंकि यीशु} {अपने लोगों को} उन गलतियों से मुक्त करने के लिये मरा जो उन्होंने उस समय की थीं जब उन्होंने परमेश्वर के द्वारा इस्राएल के साथ बाँधी गई उस वाचा का पालन नहीं किया था।

16 अब जब कोई व्यक्ति वसीयत बनाता है {जो एक प्रकार की
वाचा ही है,} तो उस वसीयत के प्रभावी होने से पहले उस
व्यक्ति को मरना होगा।

17 असल में, प्रत्येक वसीयत केवल मरे हुए व्यक्ति के कारण
ही वैध होती है। {ऐसा इसलिये है} क्योंकि कोई वसीयत उस
समय तक प्रभावी नहीं होती जब तक कि उसे बनाने वाला
व्यक्ति जीवित हो।

18 ठीक इसी प्रकार, जब परमेश्वर ने {इस्राएलियों के} साथ
वाचा बाँधी तो उसने निश्चित रूप से उनसे लहू का {उपयोग
करने की} अपेक्षा की थी।

19 वास्तव में, परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था में जो-जो आज्ञाएँ दी
थीं जब मूसा ने इस्राएलियों को वह सब बता दिया, तो उसके
बाद उसने {एक कटोरा} उठाया जिसमें किसी के द्वारा
बलिदान चढ़ाए गए पशुओं का लहू {भरा हुआ था}। फिर,
पानी, लाल कपड़े और जूफा के पौधे के कुछ हिस्सों का
उपयोग करते हुए, उसने वह लहू उस पुस्तक पर {जिसमें
उसने वह सब लिख दिया था जिसकी परमेश्वर ने आज्ञा दी थी}
और सब इस्राएलियों पर छिड़क दिया।

20 {और जब उसने वह लहू छिड़क दिया,} तो उसने उनसे
कहा, "यह लहू इस बात का प्रतीक है {कि} जो वाचा परमेश्वर
ने तुम्हारे साथ बाँधी थी, {वह अब प्रभावी हो गई है}।"

21 इसी प्रकार मूसा ने पवित्र तम्बू पर और {याजकों के द्वारा}
परमेश्वर की सेवा में {उपयोग किए जाने वाले} प्रत्येक सामान
पर भी लहू छिड़क दिया।

22 इसके अलावा, परमेश्वर ने मूसा की व्यवस्था में यह आज्ञा
दी है कि याजकों को लगभग हर बार {लोगों को या वस्तुओं
को} शुद्ध करते समय लहू का उपयोग करना चाहिए। असल
में, परमेश्वर किसी भी व्यक्ति को उस समय तक क्षमा नहीं
करता जब तक कि कोई याजक {उस पशु का} लहू अर्पित न
करे {जिसे किसी व्यक्ति ने बलिदान चढ़ाया हो}।

23 इसलिये फिर, याजकों को स्वर्गीय {परम पवित्र स्थान} की
{पार्थिव} नकल को शुद्ध करने के लिये पशुओं को बलिदान
चढ़ाना पड़ेगा। ठीक उसी तरह, {यीशु को} स्वर्गीय {परम
पवित्र स्थान} को {शुद्ध करने के लिये} और भी बड़ी भेंट
चढ़ानी पड़ेगी।

24 {जब उसने वह भेंट चढ़ायी,} तो मसीह सर्वोच्च स्वर्ग पर
चला गया, जहाँ उसने इस समय हमारी सहायता करने के
लिये स्वयं को परमेश्वर के सामने प्रकट किया है। वह उस
परम पवित्र स्थान में नहीं गया जिसे मनुष्यों ने बनाया था, जो
कि सबसे वास्तविक परम पवित्र स्थान का एक नमूना है।

25 इसके अलावा, वह स्वयं को केवल एक बार भेंट स्वरूप
चढ़ाने के लिये {सर्वोच्च स्वर्ग पर चला गया}। {पार्थिव}
शासकीय याजक ऐसा नहीं करते हैं। वे हर वर्ष परम पवित्र
स्थान में जाकर उस पशु का लहू {अर्पित करते हैं} {जिसे
किसी व्यक्ति ने बलिदान चढ़ाया हो}।

26 {यदि यीशु को वास्तव में स्वयं को एक बार से अधिक भेंट
स्वरूप चढ़ाने की आवश्यकता होती,} तो उसे उस समय से
बहुत बार मरने की आवश्यकता होती जब परमेश्वर ने सब
वस्तुओं की सृष्टि की थी। परन्तु {यीशु के बारे में} जो बात सत्य
है वह यह है: इस अंतिम समयकाल में, उसने पाप को
शक्तिहीन करने के लिये केवल एक बार स्वयं को भेंट स्वरूप
चढ़ा दिया।

27 हर एक मनुष्य केवल एक ही बार मरेगा, और उस समय
परमेश्वर यह निर्णय लेगा कि वे दोषी हैं या निर्दोष हैं।

28 ठीक उसी प्रकार, मसीह ने स्वयं को केवल एक बार कई
लोगों के पापों को दूर करने के लिये भेंट स्वरूप चढ़ा दिया।
फिर, वह पापों को {दूर करने के लिये} नहीं, बल्कि अपने उन
लोगों को बचाने के लिये {पृथ्वी पर} दोबारा आएगा, जो लगन
लगाकर उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

Hebrews 10:1

1 जो व्यवस्था {परमेश्वर ने मूसा के माध्यम से दी थी}, वह स्वयं
उन अद्‌भुत वस्तुओं में से एक नहीं है जो परमेश्वर अपने लोगों
को देगा। बल्कि, यह केवल उन अद्‌भुत वस्तुओं की ओर
संकेत करती है। इसलिये, भले ही जो लोग परमेश्वर के निकट
जाते हैं वे सर्वदा अपनी भेंटें प्रतिवर्ष चढ़ाते हैं, परन्तु ऐसा करने
से वे कभी भी वह नहीं बन पाते जो परमेश्वर उन्हें बनाना चाहते
हैं।

2 मान लो कि {उन भेंटों} ने वास्तव में उन लोगों को शुद्ध कर
दिया जो परमेश्वर की आराधना करते हैं। {उस मामले में,} वे
कभी भी अपने पापों के लिये दोषी महसूस नहीं करेंगे, और वे
भेंटें चढ़ाना बंद कर देंगे।

3 परन्तु {उन भेंटों के विषय में जो बात सत्य है वह यह है}: वे
लोगों को प्रतिवर्ष उनके पापों की याद दिलाते हैं।

4 {वे भेंटें ऐसा केवल इसलिये कर सकती हैं,} क्योंकि किसी
व्यक्ति के द्वारा बलिदान किए गए पशुओं का लहू लोगों के
पापों को दूर नहीं कर सकता है।

5 इसी कारण से, जब मसीह पृथ्वी पर आया, तो उसने {अपने
पिता से} कहा, "तू नहीं चाहता कि {लोग} भेंटें {चढ़ाएँ}। इसके
बजाय, तूने मेरे लिये एक मानवीय देह को तैयार किया।

6 तूने उन बलिदानों का आनन्द नहीं उठाता जो लोग अपने
पापों को दूर करने के लिये चढ़ाते हैं।

7 इसलिये, मैंने {ये शब्द} बोले कि 'मैं यहाँ हूँ! जो किसी ने मेरे
बारे में पवित्रशास्त्र में लिखा है। हे मेरे परमेश्वर, मैं वही
करूँगा, जो तू चाहता है {कि मैं करूँ}।'"

8 मसीह ने {परमेश्वर से} जो बात सबसे पहले कही वह यह है:
"वह भेंटें {जो लोग चढ़ाते हैं} या वह बलिदान जो लोग अपने
पापों को दूर करने के लिये चढ़ाते हैं, तू वह नहीं चाहता और
न ही तू उनका आनन्द लेता है।" वे भेंटें और बलिदान वही हैं
जिन्हें इस्राएली लोग {परमेश्वर को} चढ़ाते हैं जैसी उसने {मूसा
के माध्यम से दी गई} व्यवस्था में माँग की थी।

9 फिर, मसीह ने दूसरी बार यह कहा: "मैं यहाँ हूँ! मैं वही
करूँगा, जो तू चाहता है {कि मैं करूँ}।" पहली बार में {उसने
जिस बारे में बोला था} उसे उसने मिटा दिया ताकि दूसरी बार
में {उसने जिस बारे में बोला था} उसे स्थापित कर सके।

10 जो परमेश्वर चाहता था वह यह है: यीशु मसीह ने अपनी देह
को केवल एक बार भेंट स्वरूप चढ़ाया, और उस {भेंट} के
द्वारा, परमेश्वर ने हमें अपने लिये अलग किया।

11 अब सभी {पार्थिव} याजकों को परमेश्वर की आराधना
करते समय प्रतिदिन खड़े होकर एक ही प्रकार की बहुत सी
भेंटें चढ़ानी पड़ती हैं। ये भेंटें {लोगों के} पापों को दूर नहीं कर
सकतीं।

12 इसके विपरीत, मसीह ने एक ही भेंट चढ़ाई जो पापों को
दूर करने में सर्वदा प्रभावशाली है। फिर, वह परमेश्वर {पिता}
के साथ रहने चला गया, जहाँ वह {सिंहासन पर} बैठकर
शासन करता है।

13 इस समय, वह {वहीं} है जब तक कि परमेश्वर उसके सभी
शत्रुओं को पराजित नहीं कर देता।

14 {मसीह वहीं पर इसलिये है,} क्योंकि उसने एक ही भेंट
चढ़ाई है, जिसके द्वारा वह उन लोगों को, जिन्हें परमेश्वर अपने
लिये अलग करता है, सर्वदा वैसा ही बनाता है जैसा परमेश्वर
उन्हें बनाना चाहता है।

15 परमेश्वर का आत्मा भी हम पर इस बात की पुष्टि करता है
{कि यह सत्य है}। जो बात उसने सबसे पहले {उन शब्दों में}
कही थी {जिसे मैं पहले ही बता चुका हूँ} वह यह है:

16 "यह उस प्रकार की वाचा है जो मैं उनके साथ शीघ्र ही
बाँधूँगा। जो मैं कहता हूँ वह यह है: मैं उन्हें मेरी व्यवस्था का
पालन करने और उसे समझने में सक्षम बनाऊँगा।"

17 फिर{, परमेश्वर के आत्मा ने दूसरी बार शब्दों में यह बात
कही थी जो मैं पहले ही बता चुका हूँ}: "मैं उन्हें उनके द्वारा
किए गए पापी और अनाज्ञाकारी कामों के लिये फिर कभी
दण्ड नहीं दूँगा।"

18 जब परमेश्वर लोगों को उनके द्वारा किए गए {पापी और
अनाज्ञाकारी} कामों के लिये क्षमा करता है, तो कोई भी
व्यक्ति पापों को दूर करने के लिये फिर बलिदान नहीं चढ़ाता।

19 इसलिये फिर, हे संगी विश्वासियों, हम इस बात के लिये पूरी
तरह से आश्वस्त हो सकते हैं कि यीशु के लहू के कारण,
{हमारे लिये} स्वर्गीय परम पवित्र स्थान में जाने का एक मार्ग
मौजूद है।

20 यीशु ने हमारे लिये वह नया और प्रभावशाली मार्ग स्थापित
किया है, जो {परम पवित्र स्थान में} लटकते हुए कपड़े से
होकर जाता है। यह {लटकता हुआ कपड़ा लाक्षणिक रूप

से} यीशु के पृथ्वी पर {जीवन बिताने के समय} का प्रतिनिधित्व करता है।

21 इसके अलावा, {मसीह ही} ऐसा शासकीय याजक है {जो} हमारे, अर्थात् परमेश्वर के लोगों के लिये काम करता है।

22 {क्योंकि वे बातें सत्य हैं,} इसलिये हमें {परमेश्वर के} निकट जाना चाहिए, और पूर्ण रीति से उसकी सेवा करते हुए और उस पर अब इस बात का पूरा-पूरा विश्वास करते हुए जाना चाहिए कि उसने हमें अंदर और बाहर से शुद्ध किया है ताकि जो बुरे काम {हमने किए हैं} उनके विषय में हम दोषी महसूस न करें।

23 जिस {परमेश्वर ने,} {हमसे इन बातों की} प्रतिज्ञा की है, वह उसे करेगा जो उसने कहा है। इसलिये, जिसके विषय में हम कहते हैं कि हम उसकी आत्मविश्वास से अपेक्षा करते हैं तो हमें उस पर पूरा-पूरा विश्वास करना चाहिए।

24 इसके अलावा, हमें एक-दूसरे के बारे में विचार करना चाहिए, विशेष करके इस बात में कि एक-दूसरे को अन्य लोगों से प्रेम करने और सही काम करने के लिये कैसे प्रोत्साहित करें।

25 भले ही कुछ लोग अक्सर ऐसा न करें, परन्तु हम {परमेश्वर की आराधना करने} और एक-दूसरे को प्रोत्साहित करने के लिये हमेशा एक साथ इकट्ठा होते रहने {के द्वारा ऐसा कर सकते हैं}। चूँकि हम जानते हैं कि यीशु शीघ्र ही वापस आ रहा है, इसलिये हमें उन कामों को करने के लिये बहुत आतुर रहना चाहिए।

26 {हमें इन सब कामों को इसलिये करना चाहिए,} क्योंकि एक बार उस सच्चे {संदेश को जो मसीह के बारे में है} पूर्ण रूप से समझ लेने के बाद, जब भी हम जानबूझकर और आदतन पाप करते हैं, तो कोई भी व्यक्ति ऐसी भेंट नहीं चढ़ा सकता जो हमारे पापों को दूर कर दे।

27 {यदि हम पाप करते रहे}, तो हम यही कर सकते हैं कि भय के साथ परमेश्वर के द्वारा हमें दोषी ठहराने की और, इसके तुरन्त बाद, हमें अपने शत्रुओं के रूप में बलपूर्वक दण्डित करने की प्रतीक्षा करें, {जो ऐसा होगा कि मानो} आग की लपटें हमें जला दे।

28 इस्राएली लोग ऐसे किसी भी व्यक्ति को मार डालते थे जो परमेश्वर के द्वारा मूसा के माध्यम से दी गई व्यवस्था का पालन करना पूर्ण रूप से बंद कर देता था, जब तक कि कम से कम दो या तीन लोग इस बात की पुष्टि न कर दें कि उस व्यक्ति ने ऐसा किया है। वे उस व्यक्ति पर दया नहीं करते थे।

29 परन्तु अब उन लोगों पर विचार करो जो परमेश्वर के पुत्र को लज्जित करते हैं। वे उसके लहू के साथ ऐसा बर्ताव करते हैं कि मानो वह साधारण लहू हो, भले ही परमेश्वर ने उस लहू का उपयोग अपनी वाचा को बाँधने और उन्हें अपने लिये अलग करने के लिये किया था। वे परमेश्वर के आत्मा का उपहास करते हैं, जो दयालु होकर कार्य करता है। परमेश्वर उचित रूप से उन लोगों को उससे भी अधिक दण्ड देगा, {जितना उसने किसी ऐसे व्यक्ति को दण्ड दिया हो, जिसने मूसा के माध्यम से परमेश्वर के द्वारा दी गई व्यवस्था का पालन करना पूर्ण रूप से बंद कर दिया हो}।

30 {हम जानते हैं कि यह बात इसलिये सत्य है,} क्योंकि हमने परमेश्वर का सामना किया है, जिसने कहा, "मैं वही हूँ जो लोगों को उस समय दण्डित करेगा जब वे मेरे विरुद्ध काम करेंगे। और मैं ऐसा उस तरीके से करूँगा जिसके वे योग्य हैं।" आगे {उसने} यह भी {कहा}, "मैं, जो प्रभु हूँ, यह निर्णय लूँगा कि मेरे लोग दोषी हैं या निर्दोष हैं।"

31 जो लोग इस बात के योग्य हैं कि एकमात्र वास्तविक परमेश्वर उन्हें दण्ड दे, तो उन्हें डरना चाहिए!

32 दूसरी तरफ, मैं चाहता हूँ कि तुम इस बारे में विचार करो कि जब तुम्हें पहली बार शुभ संदेश के बारे में पता चला तो तुम्हें कैसा लगा था। उस समय में, तुमने {परमेश्वर पर भरोसा करना} जारी रखा, जबकि जो भी दुःख तुमने सहा, उसका तुमने दृढ़तापूर्वक सामना किया।

33 कुछ मामलों में, लोगों ने सार्वजनिक रूप से तुम्हारा अपमान किया और तुम्हें चोट पहुँचाई। अन्य मामलों में, तुमने उन दूसरे लोगों की सहायता की जिन्होंने उन्हीं बातों का अनुभव किया था।

34 और भी विशेष रूप से, तुमने जेल में बंद लोगों के प्रति तरस खाकर काम किया। साथ ही, जब लोगों ने तुम्हारी सम्पत्ति छीन ली, तब भी तुम आनन्दित हुए। {तुमने ऐसा इसलिये किया} क्योंकि तुमने इस बात को पहचान लिया था कि परमेश्वर के पास तुम्हारे लिये कोई बड़ी और अधिक समय तक टिकने वाली वस्तु है।

35 इसलिये, इस बात में आश्वस्त बने रहो {कि परमेश्वर ने जो
प्रतिज्ञा की है वह उसे पूरा करेगा}। परमेश्वर उन लोगों को
बहुत प्रतिफल देता है जो इस रीति से आश्वस्त होते हैं।

36 जैसा कि तुम देख सकते हो, कि तुम्हें {परमेश्वर पर भरोसा}
बनाए रखने की आवश्यकता है। उस रीति से, एक बार जब
तुम वह कर लेते हो जो परमेश्वर की इच्छा है, तो तुम्हें वह
मिलेगा जो उसने {तुम्हें देने की} प्रतिज्ञा की है।

37 एक भविष्यद्वक्ता ने जो लिखा था वह यह है कि: "वह जन
जो आने वाला है वह बहुत शीघ्र ही आ जाएगा। वह लम्बे समय
तक प्रतीक्षा नहीं करेगा।

38 इसके अलावा, जो लोग धार्मिकता के साथ मेरी सेवा करते
हैं वे जीवित रहते हुए {मुझ पर} भरोसा रखेंगे। परन्तु मान लो
कि वे {मुझ पर भरोसा करना} बंद कर दें। तब, वे मुझे प्रसन्न
नहीं करेंगे।"

39 हालाँकि, हम उनमें से नहीं हैं जो {परमेश्वर पर भरोसा
करना} छोड़ देते हैं, जिन्हें वह नष्ट कर देगा। बल्कि, हम वो हैं
जो {परमेश्वर पर} भरोसा रखते हैं, इसलिये वह हमें बचाता है।

Hebrews 11:1

1 जब लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, तो ऐसा करना उन्हें
इस बात के लिये सुनिश्चित करता है कि उन्हें वह मिलेगा
जिसकी वे आत्मविश्वास से अपेक्षा करते हैं। {जब लोग
परमेश्वर पर भरोसा करते हैं,} तो ऐसा करना उन्हें उन वस्तुओं
के बारे में निश्चित बनाता है जिन्हें वे देखते नहीं हैं।

2 असल में, क्योंकि इस्राएल के पूर्वजों ने परमेश्वर पर भरोसा
किया था, इसलिये उसने उन्हें स्वीकार किया।

3 क्योंकि हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, इसलिये हम इस
बात को मानते हैं कि, जो कुछ भी अस्तित्व में है उसे परमेश्वर
ने बोलने के द्वारा, स्थापित किया है। इसलिये फिर, जो वस्तुएँ
हम देखते हैं वे उन दूसरी वस्तुओं से नहीं आतीं जिन्हें हम देख
सकते हैं।

4 क्योंकि उसने परमेश्वर पर भरोसा किया था, इसलिये आदम
के पुत्र हाबिल ने अपने बड़े भाई कैन की तुलना में परमेश्वर
को अधिक स्वीकार्य भेंट चढ़ाई। क्योंकि उसने परमेश्वर पर
भरोसा किया था, इसलिये जो कुछ भी उसने चढ़ाया उसके
लिये परमेश्वर ने उसे स्वीकार किया और इस बात की घोषणा
की कि जो उसने किया वह सही था। यद्यपि हाबिल तो मर
गया, तौभी जैसे उसने परमेश्वर पर भरोसा किया था उससे
हम अभी भी शिक्षा ले सकते हैं।

5 क्योंकि हनोक ने परमेश्वर पर भरोसा किया था, इसलिये
परमेश्वर ने उसे {स्वर्ग पर} उठा लिया, और इस प्रकार वह
कभी नहीं मरा। जैसा {मूसा ने लिखा है,} "किसी को भी
उसका पता नहीं मिला। ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि परमेश्वर
ने उसे {स्वर्ग पर} उठा लिया था।" अब परमेश्वर ने {हनोक को
स्वर्ग पर} उठाने से पहले, इस बात की घोषणा की थी कि
हनोक ने उसे प्रसन्न किया है।

6 असल में, लोग केवल तभी परमेश्वर को प्रसन्न कर सकते हैं
जब वे उस पर भरोसा करते हैं। {ऐसा इसलिये है} क्योंकि जो
लोग परमेश्वर के निकट जाते हैं उन्हें यह विश्वास करना पड़ता
है कि वह वास्तविक है और वह उन लोगों को प्रतिफल देगा
जो उसकी सेवा और आराधना करना चाहते हैं।

7 क्योंकि उसने परमेश्वर पर भरोसा किया, इसलिये नूह ने
{उस पर विश्वास करने के द्वारा} उस समय परमेश्वर का आदर
किया जब परमेश्वर ने उस पर वह बात प्रकट की थी जिसे वह
अभी अनुभव नहीं कर सकता था। इसलिये, नूह ने अपने
परिवार को {परमेश्वर के द्वारा भेजे जाने वाले जलप्रलय से}
बचाने के लिये जहाज़ का निर्माण किया। चूँकि नूह ने {इस
रीति से} परमेश्वर पर भरोसा किया था, इसलिये उसने इस
बात को साबित कर दिया कि बाकी सब लोग दोषी थे। इसके
अलावा, नूह एक ऐसा व्यक्ति बन गया जिसे परमेश्वर ने अपने
साथ धर्मी इसलिये ठहराया क्योंकि नूह ने उस पर भरोसा
किया था।

8 क्योंकि उसने परमेश्वर पर भरोसा किया था, इसलिये
अब्राहम ने वही किया जो परमेश्वर ने उससे बात करते समय
कहा था। उसने उस स्थान की यात्रा के लिये {अपना घर} छोड़
दिया जिसे परमेश्वर शीघ्र ही उसका नया घर बनाएगा। जब
उसने {अपना घर} छोड़ा, तो उसे ठीक से यह पता भी नहीं था
कि {यह नया घर} कहाँ {होगा}।

9 क्योंकि उसने परमेश्वर पर भरोसा किया था, इसलिये
अब्राहम उसी देश में रहा जिसे परमेश्वर ने {उसे देने की}
प्रतिज्ञा की थी, परन्तु वह अभी तक उसका देश नहीं था। {भले
ही} परमेश्वर ने उन तीनों से यह प्रतिज्ञा की थी {कि वह उन्हें

यह देश देगा}, तौभी वह अपने पुत्र इसहाक और अपने पोते याकूब के साथ अस्थायी आश्रयों में रहता था।

10 {अब्राहम उस प्रकार से इसलिये रहता था} क्योंकि वह उस सुरक्षित और स्थायी {स्वर्गीय} नगर {में रहने की} आशा कर रहा था जिसे परमेश्वर ने बनाया था।

11 क्योंकि उसने विश्वास किया था, इसलिये अब्राहम {अपनी पत्नी} सारा के साथ एक पुत्र उत्पन्न करने में सक्षम हुआ, भले ही वह इतना बूढ़ा हो गया था कि सामान्य रूप से वह सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकता था। {ऐसा इसलिये हुआ} क्योंकि उसने यह अनुमान लगाया था कि जो परमेश्वर ने कहा है वह उसे निश्चित रूप से करेगा।

12 इसलिये फिर, यद्यपि अब्राहम बहुत बूढ़ा था, तौभी उसके बहुत से वंशज {अर्थात् इस्राएली} हुए। {जैसी परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी,} {इस्राएलियों} की संख्या उतनी ही है जितनी संख्या में आकाश में तारे हैं और जितनी संख्या में समुद्र तट पर रेत के कण हैं।

13 उन सब लोगों ने उनके मरने के समय तक परमेश्वर पर भरोसा किया था। {जब तक वे जीवित रहे,} तब तक उन्होंने उस बात का अनुभव नहीं किया जो परमेश्वर ने {उन्हें देने की} प्रतिज्ञा की थी, परन्तु वे जानते थे कि परमेश्वर शीघ्र ही उस काम को करेगा जिसकी उसने प्रतिज्ञा की थी। उन्होंने सब लोगों पर इस बात को प्रकट किया कि वे सचमुच इस संसार के नहीं हैं।

14 वास्तव में, वे सब लोग जो {इस संसार का न होने के बारे में} बात करते हैं, वे स्पष्ट रूप से इस बात को प्रकट करते हैं कि वे अपने देश में {रहना} चाहते हैं।

15 परन्तु मान लो कि ये {विश्वासयोग्य लोग} उस देश को अपना देश बनाना चाहते हैं जिसे उन्होंने छोड़ा था। उस मामले में, वे वहाँ वापस जा सकते थे{, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया}।

16 परन्तु {उनके विषय में} जो बात सत्य है वह यह है: उन्होंने एक ऐसे बड़े देश की इच्छा की थी जो स्वर्ग में है। इस कारण से, जब दूसरे लोग परमेश्वर को उन लोगों के परमेश्वर के रूप में वर्णित करते हैं {जिन्होंने उस पर भरोसा किया था}, तो इससे परमेश्वर का आदर होता है। {तुम बता सकते हो कि यह बात इसलिये सत्य है,} क्योंकि परमेश्वर ने उनके {रहने के लिये} एक नगर बनाया है।

17 क्योंकि उसने परमेश्वर पर भरोसा रखा, इसलिये जब परमेश्वर ने उसकी परीक्षा की, तो उस समय अब्राहम ने {अपने पुत्र} इसहाक को {बलिदान स्वरूप} चढ़ाया। वास्तव में, जिस व्यक्ति से परमेश्वर ने {बहुत से वंशजों की} प्रतिज्ञा की थी, वह {अपने और अपनी पत्नी सारा की} एकलौती सन्तान को {बलिदान स्वरूप} चढ़ाने वाला था।

18 {असल में,} परमेश्वर ने अब्राहम से {पहले ही} कहा था कि, "जिन बहुत से वंशजों को {मैंने तुझे देने की प्रतिज्ञा की है} वे {तेरे पुत्र} इसहाक से उत्पन्न होंगे।"

19 {अब्राहम ने इस तरीके से कार्य इसलिये किया क्योंकि} उसने अनुमान लगाया था कि परमेश्वर मृत लोगों को फिर से जीवित कर सकता है। असल में, बोलने के ढंग से तो अब्राहम ने इसहाक को मरने के बाद वापस पा लिया था।

20 क्योंकि उसने परमेश्वर पर भरोसा किया था, इसलिये इसहाक ने {अपने पुत्रों} याकूब और एसाव को इस बात की घोषणा करते हुए आशीष दी थी कि {उनमें से प्रत्येक के साथ} क्या घटित होगा।

21 क्योंकि उसने परमेश्वर पर भरोसा किया था, जब वह मरने पर था, उस समय याकूब ने {अपने पुत्र} यूसुफ के दोनों पुत्रों को आशीष दी। अपनी लाठी का सहारा लेते हुए उसने परमेश्वर की स्तुति की।

22 क्योंकि उसने परमेश्वर पर भरोसा किया था, इसलिये जब वह मरने पर था, उस समय यूसुफ ने इस विषय में बताया कि इस्राएली लोग {मिस्र देश से} कैसे निकलेंगे। साथ ही, उसने {उन्हें} यह भी आज्ञा दी कि {जब वे निकलें} तो उसकी हड्डियाँ {अपने साथ ले जाएँ}।

23 क्योंकि उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा किया था, इसलिये मूसा के माता-पिता ने मूसा को उसके जन्म के बाद 13 सप्ताहों तक छिपाकर रखा। उन्होंने {इस्राएलियों के पुत्रों को मार डालने के विषय में} साहस करके {मिस्र के} राजा की आज्ञा का पालन नहीं किया। {उन्होंने ऐसा इसलिये किया} क्योंकि वे यह बता सकते थे कि मूसा एक उत्तम सन्तान है।

24 क्योंकि उसने परमेश्वर पर भरोसा किया था, इसलिये जब
मूसा बड़ा हुआ, तो जैसे वह मिस्र के राजा {की बेटियों} में से
एक के {गोद लिये हुए} पुत्र के रूप में रह रहा था, उसने उसे
ठुकरा दिया।

25 उसने कुछ समय तक पाप करने का आनन्द लेने के बजाय
इस बात का अनुभव करने का निर्णय लिया कि लोगों ने
परमेश्वर की प्रजा के साथ कैसा दुर्व्यवहार किया था।

26 उसने अनुमान लगाया कि मसीह के कारण लोग उसका
जो अपमान कर रहे हैं, वह मिस्र {देश} की सब मूल्यवान
वस्तुओं की तुलना में अधिक मूल्यवान था। {उसने इस रीति
से इसलिये विचार किया,} क्योंकि उसने अपना ध्यान उस बात
पर लगाया था कि परमेश्वर उसे कैसे प्रतिफल देगा।

27 क्योंकि मूसा ने परमेश्वर पर भरोसा किया था, इसलिये वह
मिस्र {देश} से निकल गया। उसे {उस बात} का भय नहीं था
जो क्रोध में आकर राजा {करेगा}। {उसने उस रीति से कार्य
इसलिये किया,} क्योंकि वह {परमेश्वर पर पूर्ण रूप से ऐसे
भरोसा} करता रहा कि मानो वह उस परमेश्वर को देख सकता
है, जो अदृश्य है।

28 क्योंकि उसने परमेश्वर पर भरोसा किया था, इसलिये मूसा
ने इस्राएलियों को {पहला} फसह का पर्व मनाने और {उनके
दरवाजों पर मेम्नों का} लहू लगाने में अगुवाई की। {उन्होंने
ऐसा इसलिये किया} ताकि {मिस्रवासियों के} पहिलौठे पुत्रों
को मारने वाला आत्मिक प्राणी उनके {पहिलौठे पुत्रों} को न
मार डाले।

29 क्योंकि उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा किया था, इसलिये {जब
परमेश्वर ने उनके लिये एक मार्ग बनाया था} तो इस्राएली लोग
लाल समुद्र के पार ऐसे चले गए जैसे कि वे कठोर भूमि {पर
चल रहे हों} । फिर, जब मिस्रियों ने पीछा करने का प्रयास
किया, तो {जब परमेश्वर ने उस मार्ग को ढाँप दिया था} वे पानी
में डूब गए।

30 क्योंकि इस्राएलियों ने परमेश्वर पर भरोसा किया था,
इसलिये इस्राएलियों के एक सप्ताह तक यरीहो नगर के चारों
ओर {बार-बार} चक्कर लगाने के बाद उसने उस {नगर के
चारों ओर} की शहरपनाह को गिरा दिया।

31 क्योंकि राहाब ने, जो वेश्या थी, परमेश्वर पर भरोसा किया
था, इसलिये उसने {यहोशू के भेजे हुए} भेदियों को बचाए
रखा। {क्योंकि उसने ऐसा किया था,} इसलिये इस्राएलियों ने
उसे उस समय मार नहीं डाला जब उन्होंने {यरीहो में रहने
वाले बाकी सब लोगों को} मार डाला था, अर्थात् उन सब को
जिन्होंने {परमेश्वर की} आज्ञा को नहीं माना था।

32 अब मैं इस विषय में और कुछ नहीं कह सकता। सचमुच,
मेरे पास तुम्हें गिदोन, बाराक, शिमशोन, यिफतह, दाऊद,
शमूएल और {अन्य} भविष्यद्वक्ताओं के बारे में बताने का
समय नहीं है।

33 क्योंकि इन लोगों ने परमेश्वर पर भरोसा किया था, इसलिये
उनमें से कुछ ने विदेशी सेनाओं को पराजित किया। दूसरों ने
न्यायपूर्वक शासन किया। दूसरों को वह मिला जिसकी
परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी। दूसरों को सिंहों के द्वारा उन्हें खा
लिये जाने से बयाचा गया।

34 दूसरों ने आग को उन्हें जलाने से रोक दिया। जब किसी ने
उन पर हिंसक आक्रमण किया तो दूसरे लोग बच गए। दूसरे
लोग उस समय शक्तिशाली बन गए जब वे निर्बल थे। दूसरों
ने अपने शत्रुओं से शक्तिशाली रीति से युद्ध किया। दूसरों ने
दूसरे देशों के सैनिकों को पूर्ण रूप से पराजित किया।

35 कुछ स्त्रियों ने इस बात का अनुभव किया कि कैसे परमेश्वर
ने उनके {परिवार के सदस्यों को} जो मर गए थे, फिर से
जीवित कर दिया। हालाँकि, दूसरे लोगों ने इस बात का
अनुभव किया कि कैसे दूसरों ने {उनसे परमेश्वर की
अनाज्ञाकारिता करवाने के लिये} उन्हें जानबूझकर चोट
पहुँचाई। इसके बावजूद वे परमेश्वर की आज्ञा मानते रहे। इस
रीति से, परमेश्वर उन्हें फिर से जीवित कर देगा ताकि वे कभी
न मरें।

36 इसके अलावा, दूसरे लोगों को उस समय कष्ट हुआ जब
दूसरों ने उनका उपहास किया या उनकी पीठ पर कोड़े मारे।
यहाँ तक कि, कभी-कभी शासकों ने उन्हें बंदी बनाकर जेल
में भी डाल दिया।

37 लोगों ने इन {विश्वासयोग्य लोगों} पर पत्थर फेंककर या उन्हें
बीच में से काटकर मार डाला। लोगों ने उन्हें {परमेश्वर की
अनाज्ञाकारिता करने के लिये} प्रलोभित किया। लोगों ने उन्हें
तलवारों से मार डाला। ये {विश्वासयोग्य लोग} पशुओं की
खालें ओढ़े हुए ही भटकते रहे। उनके पास खाने को कुछ नहीं
था, और लोगों ने उन पर अत्याचार किया तथा उनके साथ बुरा
व्यवहार किया।

38 {भले ही} वे लोग जो परमेश्वर पर भरोसा करने वाले लोगों
के साथ एक ही स्थान में रहने के योग्य नहीं थे, तौभी {उन लोगों
ने उनके साथ ऐसा व्यवहार किया}। {इसके बावजूद,} इन
विश्वासयोग्य लोगों को जंगलों में, पहाड़ों पर और पृथ्वी की
गुफाओं में रहना पड़ा।

39 यद्यपि परमेश्वर ने इन सब लोगों को इसलिये स्वीकार किया
क्योंकि उन्होंने उस पर भरोसा किया था, तौभी उसने उन्हें
{अभी तक} वह नहीं दिया जिसे उसने {उन्हें देने की} प्रतिज्ञा
की थी।

40 बल्कि, परमेश्वर ने {जो कुछ उन लोगों ने जीवित रहते हुए
प्राप्त किया था, उसकी तुलना में} हमें कुछ बड़ा देने के लिये
समय से पहले ही तैयार किया है। उस रीति से, केवल जब हम
और वे सब एक साथ होंगे उसी समय हम सब वह बनेंगे जो
परमेश्वर हमें बनाना चाहता है।

Hebrews 12:1

1 अतः फिर, क्योंकि वे सब लोग हमें देख रहे हैं, जिन्होंने
परमेश्वर पर भरोसा किया था, इसलिये हमें भी परमेश्वर पर
भरोसा करने में दृढ़ रहने की आवश्यकता है। ऐसा करने के
लिये, हमें पाप करना बंद करना होगा और ऐसी किसी भी
वस्तु से बचना होगा जो हमारे लिये बाधा बन सकती है।

2 हमें यीशु पर ध्यान लगाने की आवश्यकता है, जो सबसे
पहले तो हमें परमेश्वर पर भरोसा करने में और फिर मरने तक
ऐसा करने में सक्षम बनाता है। जब वह क्रूस पर मरा तो वह
स्वयं दृढ़ बना रहा, और उसने इस बात की परवाह नहीं की
कि वह लज्जापूर्ण रीति से मरा। {उसने उन तरीकों से कार्य
इसलिये किया} क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर उसे बाद
में आनन्दित करेगा। अब, वह परमेश्वर {पिता} के साथ है,
जहाँ वह सिंहासन पर बैठकर शासन करता है।

3 तुम्हें यीशु के बारे में विचार करना चाहिए, जो उस समय भी
दृढ़ बना रहा जब पापी लोगों ने उससे झगड़ा किया, {यद्यपि}
उन्होंने {केवल} स्वयं को ही चोट पहुँचाई। इस रीति से, तुम
भीतर से मजबूत होकर दृढ़ बने रह सकते हो।

4 अब तक तुम बुराई का विरोध करते हुए और पाप से बचने
के निमित्त कठिन परिश्रम करते हुए भी नहीं मरे।

5 इसके अलावा, तुम वह याद करने में असफल रहे हो जिसे
करने के लिये {सुलैमान} ने अपनी सन्तानों को प्रोत्साहित
किया था, जो तुम पर भी लागू होता है। {जो सुलैमान ने लिखा
था वह यह है}: "हे मेरे बच्चों, जब प्रभु तुम्हें प्रशिक्षित करे तो
ध्यान लगाकर सीखो। वास्तव में, जब वह तुम्हें सुधारे तो दृढ़
बने रहो।

6 {तुम्हें ऐसा इसलिये करना चाहिए,} क्योंकि प्रभु {परमेश्वर}
जिस किसी से प्रेम रखता है उसे प्रशिक्षित करता है। वास्तव
में, वह हर उस बच्चे को कठोरता से सुधारता है जिसे वह
अपना कहता है।"

7 तुम्हें दृढ़ रहने की इसलिये आवश्यकता है ताकि परमेश्वर
तुम्हें प्रशिक्षित कर सके। परमेश्वर तुम्हारे प्रति इन तरीकों से
कार्य इसलिये करता है क्योंकि तुम उसकी सन्तान हो। {तुम
बता सकते हो कि यह बात इसलिये सत्य है,} क्योंकि माता-
पिता हमेशा अपने स्वयं के बच्चों को प्रशिक्षित करते हैं।

8 मान लो कि परमेश्वर ने तुम्हें प्रशिक्षित नहीं किया, भले ही
उसने बाकी सब को प्रशिक्षित किया हो। उस मामले में, तुम
वास्तव में {परमेश्वर की} सन्तान नहीं ठहरोगे।

9 इसके अलावा, जब हम बच्चे थे तो हमारे मानवीय माता-
पिता ने हमें प्रशिक्षित किया, और हमने उनका सम्मान किया।
इसलिये, जब हमारा आत्मिक पिता{, अर्थात् परमेश्वर, हमें
प्रशिक्षित करता है}, तो हमें इसे और भी अधिक स्वीकार
करना चाहिए। इस रीति से, हम {सर्वदा} जीवित रहेंगे।

10 इसके अलावा, हमारे मानवीय माता-पिता ने थोड़े समय के
लिये हमें उन तरीकों से प्रशिक्षित किया जो उन्हें सही लगे।
हालाँकि, हमारा परमेश्वर पिता उन तरीकों से {हमें प्रशिक्षित
करता है} जो {हमारे लिये} सर्वोत्तम हैं। उस रीति से, हम ऐसे
लोग बन जाते हैं जिन्हें उसने अलग कर दिया है, जैसे वह स्वयं
को भी अलग करता है।

11 जब कभी भी परमेश्वर हमें प्रशिक्षित करता है, तब ऐसा होते
समय हम आनन्दित होने के बजाय दुःखी होते हैं। हालाँकि,
एक बार जब हम समझ जाते हैं कि परमेश्वर हमें कैसे
प्रशिक्षित कर रहा है, तो हम शान्तिपूर्वक वह करने में सक्षम
हो जाते हैं जो सही है।

12 इन सबके कारण, तुम्हें परमेश्वर पर भरोसा करने में दृढ़
होने के लिये स्वयं को वैसे ही तैयार करने की आवश्यकता है,

जैसे धावक अपने थके हुए शरीर को दौड़ते रहने के लिये तैयार करते हैं।

13 तुम्हें परमेश्वर पर भरोसा करने और उसकी आज्ञा मानने पर वैसे ही ध्यान लगाने की आवश्यकता है, जैसे कोई धावक सबसे सीधे मार्ग पर दौड़ने पर ध्यान लगाता है। उस रीति से, जो कोई भी आत्मिक रूप से निर्बल है वह परमेश्वर पर भरोसा करना बंद नहीं करेगा, परन्तु इसके बजाय उस पर और अधिक भरोसा करेगा।

14 तुम्हें सबके साथ शान्तिपूर्वक रहने का प्रयास करना चाहिए। साथ ही, {तुम्हें} स्वयं को परमेश्वर के लिये अलग करने का {प्रयास करना चाहिए}। यदि तुम ऐसा करोगे तो ही तुम अन्त में प्रभु के साथ रह पाओगे।

15 इस बात को सुनिश्चित करो कि तुम्हारे संगी विश्वासियों को वह पूर्ण रूप से प्राप्त हो जो परमेश्वर ने तुम्हें दिया है। ऐसे किसी भी व्यक्ति {से सावधान रहो} जो आक्रोशपूर्ण व्यवहार करना आरम्भ करके {संगी विश्वासियों को} परेशान करता है। यह कई {दूसरे विश्वासियों को} भी इसी तरह व्यवहार करने के लिये प्रेरित कर सकता है।

16 उन लोगों {से सावधान रहो} जो अनुचित यौन सम्बन्ध रखते हैं या स्वयं को परमेश्वर के लिये अलग नहीं करते। {ये लोग} एसाव के समान {हैं}, जिसने {अपने छोटे भाई याकूब से} कुछ भोजन प्राप्त करने के लिये उसे पहलौठी सन्तान के रूप में कार्य करने की अनुमति दे दी।

17 {तुम्हें एसाव के समान होने से इसलिये बचना चाहिए,} क्योंकि तुम वह जानोगे जो बाद में उसके साथ हुआ था। वह चाहता तो था कि उसका पिता उसे आशीष दे, परन्तु उसके पिता ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। जैसा कि तुम देख सकते हो, कि एसाव ने जो किया था उसे वह बदल नहीं सका, यहाँ तक कि जब उसने {इसे बदलने का} प्रयास किया उस समय वह रोया भी था।

18 परमेश्वर के पास आने में, तुमने उन चीजों का अनुभव नहीं किया है जो इस्राएली लोगों ने सीनै पर्वत पर अनुभव किया था। वे उस पहाड़ के पास पहुँचे जिसे परमेश्वर ने उन्हें न छूने की आज्ञा दी थी क्योंकि वह स्वयं उस पहाड़ पर उतर आया था। वे एक धधकती हुई आग के पास पहुँचे, और यह भयंकर तूफ़ान से, अँधेरे बादलों और काली घटाओं से भरा हुआ था।

19 उन्होंने किसी को तुरही बजाते और परमेश्वर को एक संदेश कहते हुए सुना। जब उन्होंने परमेश्वर को बोलते हुए सुना, तो उन्होंने उससे विनती की कि वह उनसे और बातें न कहे।

20 {उन्होंने ऐसा इसलिये किया,} क्योंकि वे उस समय डर गए थे जब परमेश्वर ने उन्हें यह आज्ञा दी, "तुम्हें इस पहाड़ को छूने वाले सब लोगों और पशुओं को मार डालना होगा। {तुम्हें} उन पर पत्थर फेंककर {उन्हें मार डालना होगा}।"

21 इसके अलावा, जब मूसा ने देखा कि वह सब कुछ कितना डरावना था, तो उसने कहा, "मैं डर के मारे काँप रहा हूँ!"

22 इसके विपरीत, तुम एक स्वर्गीय स्थान, अर्थात् सिय्योन पर्वत के निकट चले गए हो। {इस पर्वत पर} स्वर्गीय यरूशलेम नगर है जो एकमात्र वास्तविक परमेश्वर का है। {इस नगर में} बहुत सारे आत्मिक प्राणी हैं जो एक साथ उत्सव मनाते हैं।

23 साथ ही {इस नगर में} वे लोग भी हैं जिनके {नाम} परमेश्वर ने स्वर्ग में लिखे हुए हैं। {वे लोग} परमेश्वर के लोग हैं, अर्थात् उसकी विशेष सन्तान हैं। और {वहाँ} परमेश्वर भी है, जो इस बात का निर्णय लेता है कि सब {लोग} दोषी हैं या निर्दोष हैं। {वहाँ} ऐसे भी लोग हैं जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानी है। वे तो मर मिटे, परन्तु अब परमेश्वर ने उन्हें वैसा बनाया है जैसा वह उन्हें बनाना चाहता है।

24 और {इस नगर में} यीशु भी है, जिसके माध्यम से परमेश्वर ने एक नयी वाचा बाँधी है। {वहाँ} यीशु का लहू भी है, जो हमें शुद्ध करता है। उसका लहू हाबिल के लहू से बढ़कर प्रभावशाली है।

25 इस बात को सुनिश्चित करो कि तुम उस परमेश्वर की आज्ञा का पालन करो, जो तुमसे बात करता है। इस बात पर विचार करो कि कैसे कुछ इस्राएलियों ने उस बात का पालन नहीं किया जिसे परमेश्वर ने उन पर सीनै पर्वत से प्रकट किया था। निश्चय ही परमेश्वर ने उन्हें दण्ड दिया। अब इस बात पर विचार करो कि {परमेश्वर} हममें से उस व्यक्ति को कितना अधिक {दण्ड देगा} जो उस बात का पालन नहीं करता जिसे सिय्योन पर्वत से वह {हम पर प्रकट करता है}।

26 जब परमेश्वर ने सीनै पर्वत से बातें कीं, तो उससे पृथ्वी हिल गई। हालाँकि, इस समय वह यह प्रतिज्ञा करता है कि, "एक बार और, मैं पृथ्वी को और स्वर्ग को भी हिला दूँगा।"

27 “एक बार और” इन शब्दों का अर्थ यह है कि परमेश्वर हर उस वस्तु को बदल देगा जिसे वह हिलाएगा। {वह इसे वैसे ही करेगा} जैसे उसने उन सब वस्तुओं को बनाया है। इस रीति से, जिन सब वस्तुओं को वह नहीं हिलाएगा वह सर्वदा के लिये बनी रहेंगी।

28 इसलिये, हम एक ऐसे राज्य में रहेंगे जिसे परमेश्वर नहीं हिलाएगा। {इस कारण से,} हमें परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए। ऐसा करने से, हम आदरपूर्वक उस तरीके से परमेश्वर की आराधना करते हैं जिससे वह प्रसन्न होता है।

29 {हमें आदरपूर्वक ऐसा इसलिये करना चाहिए,} क्योंकि जिस परमेश्वर की हम {आराधना करते हैं} वह भड़कती हुई आग {के समान सामर्थी और भयंकर} है।

Hebrews 13:1

1 अपने संगी विश्वासियों से प्रेम करने में दृढ़ बने रहो।

2 इस बात को सुनिश्चित करो कि तुम दूसरे लोगों का स्वागत कर रहे हो। {तुम्हें ऐसा इसलिये करना चाहिए} क्योंकि दूसरों का स्वागत करने वाले कुछ लोगों ने वास्तव में आत्मिक प्राणियों का स्वागत किया था, यद्यपि वे यह नहीं जानते थे {कि वे आत्मिक प्राणी हैं}।

3 जो लोग जेल में हैं उनकी सहायता अवश्य करो। {तुम्हें उनकी सहायता वैसे ही करनी है} जैसे {तुम चाहते हो कि दूसरे लोग तुम्हारी सहायता करें} जब तुम उनके साथ जेल में हों। {साथ ही,} उन लोगों की {सहायता करना न भूलो} जिनके साथ दूसरे लोग बुरा बर्ताव करते हैं। {तुम्हें ऐसा इसलिये करना चाहिए} क्योंकि तुम भी तो ऐसे मनुष्य हो {जो पीड़ित हो सकते हैं}।

4 तुम सब लोगों को इस बात को बहुत बढ़कर समझना चाहिए कि जब लोग विवाह करते हैं तो परमेश्वर कैसे लोगों को एक साथ जोड़ता है। इसके अलावा, जो लोग विवाह करते हैं उन्हें केवल अपने जीवनसाथी के साथ ही यौन सम्बन्ध बनाना चाहिए। {तुम्हें उन कामों को इसलिये करना चाहिए} क्योंकि परमेश्वर उस व्यक्ति को दोषी ठहराएगा जो किसी विवाहित व्यक्ति के साथ यौन सम्बन्ध बनाता है या जो किसी भी रीति से अनुचित यौन सम्बन्ध रखता है।

5 धन की इच्छा करने से तुम्हें सर्वदा बचना चाहिए। तुम्हारे पास जो कुछ भी है उसमें प्रसन्न रहने के द्वारा {तुम ऐसा कर सकते हो}। {तुम्हें इस रीति से इसलिये व्यवहार करना चाहिए,} क्योंकि परमेश्वर ने {तुममें से प्रत्येक से ये शब्द} कहे हैं: “मैं तुझे निश्चय ही न त्यागूँगा। हाँ, मैं सर्वदा तेरे साथ रहूँगा।”

6 क्योंकि {परमेश्वर ऐसा कहता है,} इसलिये हम साहसपूर्वक {ये शब्द} कहते हैं: “वह प्रभु {परमेश्वर} ही है जो मुझे सम्भालता है। इस कारण, मैं किसी से नहीं डरता। कोई भी मुझे {चोट पहुँचाने} के लिये कुछ नहीं कर सकता।”

7 उन लोगों पर ध्यान दो जो तुम्हारे समूह के प्रभारी हैं। मेरा अर्थ उन लोगों से है जिन्होंने तुम्हें वह बताया {जो} परमेश्वर ने {किया है}। {उन भली बातों} की जाँच करो जो उनके जीवनयापन के तरीके के कारण घटित हुईं। जिस प्रकार उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा किया तुम्हें उसका अनुकरण करना चाहिए।

8 यीशु मसीह न कभी बदला है और न कभी बदलेगा।

9 दूसरे लोगों को तुम्हें अनेक प्रकार की ऐसी बातें सिखाने के द्वारा पथभ्रष्ट न करने दो जो {सुसमाचार से} मेल नहीं खातीं। {जो बातें वे सिखाते हैं उसे तुम्हें इसलिये अस्वीकार कर देना चाहिए,} क्योंकि जो परमेश्वर हमें उचित रूप से देता है केवल वही हमें मजबूत बनाता है। जो भोजन {हम खाते हैं} वह {ऐसा} नहीं कर सकता। असल में, जो लोग ऐसा व्यवहार करते हैं कि मानो {भोजन ऐसा कर सकता है}, उन्हें कुछ भी लाभ नहीं होता है।

10 हमें {यीशु की} भेंट से लाभ होता है, जो याजकों के द्वारा पवित्र तम्बू में चढ़ाई गई {भेंटों से कहीं बढ़कर है}। {असल में, वे याजक} यीशु की भेंट में भाग लेने में असमर्थ होंगे।

11 परम पवित्र स्थान में, शासकीय याजक उन पशुओं का लहू चढ़ाता था {जिन्हें उसने मार डाला था}। पापों को दूर करने के लिये {उसने ऐसा किया}। {फिर} कोई व्यक्ति इन पशुओं के अवशेषों को इस्राएलियों के रहने के स्थान से दूर ले जाकर पूर्ण रूप से जला देता था।

12 इसलिये, यीशु भी वहाँ से दूर जाकर मरा जहाँ {यरूशलेम नगर में} लोग रहते थे। {उसने} अपना स्वयं का लहू चढ़ाने के द्वारा {परमेश्वर के} लोगों को अपने लिये अलग करने के निमित्त {ऐसा किया}।

13 इसलिये फिर, हमें वह सब कुछ त्याग देना चाहिए जो हमें
मसीह से अलग कर सकता है। {जब हम ऐसा करते हैं,} तो
हमें उस बात को स्वीकार करना होगा जब लोग हमारा
अपमान वैसे ही करते हैं जैसे उन्होंने उसका अपमान किया
था।

14 {हमें ऐसा इसलिये करना चाहिए} क्योंकि, यहाँ {पृथ्वी पर},
हम किसी ऐसे नगर में नहीं रहते जो सर्वदा बना रहेगा। बल्कि,
हम उस नगर {में रहने की} इच्छा रखते हैं जो परमेश्वर हमें
शीघ्र ही देगा।

15 यीशु के द्वारा हमारी सहायता करने पर, हमें बार-बार
परमेश्वर की स्तुति इस प्रकार करनी चाहिए, कि मानो हम उसे
भेंट चढ़ा रहे हों। हम ऐसा उस समय करते हैं जब हम कहते
हैं कि हम यीशु पर विश्वास करते हैं।

16 इसके अलावा, हमें इस बात को सुनिश्चित करने की
आवश्यकता है कि हमारे पास जो कुछ है उसमें से कुछ देने
के द्वारा हम दूसरों की सहायता करें। ऐसा करना परमेश्वर को
प्रसन्न करने वाली भेंट चढ़ाने के समान है।

17 जो लोग तुम्हारे समूह के प्रभारी हैं {वे जानते हैं कि}
परमेश्वर उन्हें तुम्हारे लिये जिम्मेदार मानता है, और इसलिये
वे हमेशा तुम्हारी देखभाल करने पर ध्यान लगाते हैं। इस
कारण से, तुम्हें आदरपूर्वक वही करना चाहिए जो वे चाहते
हैं। इस रीति से, वे {तुम्हारे समूह की अगुवाई} दुःखी होकर
करने के बजाय आनन्दित होकर कर सकते हैं। वास्तव में,
{यदि वे दुःखी होकर अगुवाई करते,} तो इससे तुम्हें कोई
सहायता नहीं मिलती।

18 कृपया परमेश्वर से प्रार्थना करो कि वह मेरी और जो मेरे
साथ में हैं उनकी सहायता करे। {मैं यह इसलिये कह रहा हूँ}
क्योंकि हमें निश्चय है कि हम दोषी नहीं हैं। वास्तव में, हमने
सर्वदा उचित व्यवहार ही करना चाहा है।

19 मैं तुमसे और भी अधिक आग्रह करता हूँ कि परमेश्वर से
विनती करो कि वह मुझे शीघ्र ही तुम्हारे पास वापस भेज दे।

20 वह परमेश्वर ही है जो अपने लोगों को शान्ति प्रदान करता
है। उसने हमारे प्रभु यीशु को मरने के बाद फिर से जीवित
कर दिया। यीशु भेड़ों के एक सामर्थी रखवाले के समान है जो
हमारी, अर्थात् अपनी भेड़ों की अगुवाई करता है। {परमेश्वर
ने उसे फिर से जीवित इसलिये किया} क्योंकि यीशु ने उस
{नयी} वाचा को बाँधने के लिये जो हमेशा के लिये बनी रहेगी
अपने स्वयं के लहू का उपयोग किया था।

21 हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर तुम्हें {अपने} सब भले
{वरदान} प्रदान करे। इस रीति से, तुम वह कर सकते हो जो
वह तुमसे करवाना चाहता है। असल में, वह यीशु मसीह के
माध्यम से हमें उस काम को करने में सक्षम बनाता है जो उसे
प्रसन्न करता है। इसलिये, आओ हम सर्वदा परमेश्वर का
आदर करें! ऐसा ही हो!

22 मैंने तुम्हें एक छोटी पत्री भेजी है। इसलिये, हे संगी
विश्वासियों, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि जो बात मैंने तुम्हें
प्रोत्साहित करने के लिये कही है कृपया उस पर ध्यानपूर्वक
विचार करो।

23 मैं चाहता हूँ कि तुम इस बात से अवगत् रहो कि {उन
अधिकारियों ने} हमारे संगी विश्वासी, तीमुथियुस को स्वतंत्र
कर दिया है। यदि वह शीघ्र यहाँ पहुँचेगा, तो हम एक साथ
आकर तुमसे मिलेंगे।

24 उन सभी को नमस्कार कहो जो तुम्हारे समूह के प्रभारी हैं।
साथ ही, परमेश्वर के सब लोगों को {नमस्कार कहो}। जो
इतालिया देश के विश्वासी हैं वे तुम्हें नमस्कार कहते हैं।

25 {मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर} तुम सब पर दयालु हो।